पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2016 का आपराधिक अपील (खंड पीठ) सं. 1160

थाना कांड सं. - 15 वर्ष-2007 थाना-आदापुर जिला-पूर्वी चंपारण से उत्पन्न

1. लक्ष्मण साह, विश्वनाथ साह के पुत्र
2. इनार साह, पन्ना लाल साह के पुत्र
3. विजय साह, महंथ साह के पुत्र
4. अजय साह, महंथ साह के पुत्र
5. महंथ साह, स्वर्गीय बंशी साह के पुत्र
6. रामएकबाल साह, स्वर्गीय जियालाल साह के पुत्र

उपरोक्त सभी ग्राम- हरपुर, थाना - हरपुर, जिला-पूर्वी चंपारण के निवासी हैं।

..... अपीलार्थी/ओं

बनाम

बिहार राज्य

...उत्तरदाता/गण

उपस्थिति:

अपीलार्थी/ओं के लिए : श्री बिंध्याचल सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता
श्री बिपिन कुमार सिंह, अधिवक्ता
राज्य के लिए : श्री दिलीप कुमार सिन्हा, अधिवक्ता
सूचक के लिए : श्री उमा शंकर वर्मा, अधिवक्ता
श्री बी. के. मिश्रा, अधिवक्ता

• भारतीय दंड संहिता, 1860 - धारा 302, 147, 149 - गैरकानूनी सभा में उत्तरदायित्व - गैरकानूनी सभा का सामान्य उद्देश्य स्वतः बन सकता है और इसे पूर्व नियोजित करने की आवश्यकता नहीं है (पैरा 23) - (उद्धृत मामले: मिजाजी बनाम उत्तर प्रदेश राज्य [(1959) एआईआर एससी 572], शंभू नाथ सिंह बनाम बिहार राज्य [(1960) एआईआर एससी 725] (पैरा 24) माना गया, किसी व्यक्ति को आईपीसी की धारा 149 के तहत दोषी ठहराया जा सकता है यदि वे गैरकानूनी सभा के सामान्य उद्देश्य को साझा करते हैं, भले ही उन्होंने घातक प्रहार न किया हो

(पैरा 21)। साक्ष्य कानून - गवाहों की गवाही - विश्वसनीयता और विरोधाभास - प्रत्यक्षदर्शियों (पीडब्लू-1, पीडब्लू-2, पीडब्लू-4, पीडब्लू-5) ने लगातार अपीलकर्ताओं की हमले में सक्रिय प्रतिभागियों के रूप में पहचान की - बयानों में मामूली विरोधाभास जब तक वे मामले की जड़ तक नहीं जाते, गवाही को अविश्वसनीय नहीं माना जा सकता - बचाव पक्ष ने एफआईआर दर्ज करने के समय के बारे में असंगतताएं उठाईं, लेकिन अदालत ने फैसला सुनाया कि अगर अभियोजन पक्ष के गवाह विश्वसनीय गवाही देते हैं तो देरी से दर्ज की गई एफआईआर अपने आप में घातक नहीं है। (उद्धृत मामला: उत्तर प्रदेश राज्य बनाम कृष्ण गोपाल [(1988) 4 एससीसी 302], भजन सिंह बनाम हरियाणा राज्य [(2011) 7 एससीसी 421] (पैरा 28)।

- मेडिकल साक्ष्य बनाम नेत्र संबंधी साक्ष्य - महत्व और पुष्टि - पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट (पीडब्लू-8, डॉ. अरुण कुमार सिंह) में सिर में कई फ्रैक्चर पाए गए, जो प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा बताई गई चोटों के अनुरूप थे (पैरा 29)।

- बचाव पक्ष ने तर्क दिया कि बाहरी चोटों की कमी अभियोजन पक्ष के मामले का खंडन करती है, लेकिन अदालत ने माना कि कुंद बल आघात के कारण होने वाली आंतरिक चोटें घातक हो सकती हैं, भले ही बाहरी घाव दिखाई न दें। • माना गया कि यदि प्रत्यक्षदर्शी के बयान सुसंगत और विश्वसनीय हैं तो नेत्र संबंधी साक्ष्य, चिकित्सा साक्ष्य में मामूली विसंगतियों पर भारी पड़ते हैं (उद्धृत मामला: सोलंकी चिमनभाई उकाभाई बनाम गुजरात राज्य [(1983) एआईआर एससी 484], राम स्वरूप बनाम राजस्थान राज्य [(2002) 13 एससीसी 134]। (पैरा 30)

- दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 - धारा 374(2) - अपीलीय समीक्षा का दायरा- अपीलीय अदालत ने अभियोजन पक्ष के सभी सबूतों की समीक्षा की और पाया कि ट्रायल कोर्ट ने सबूतों का सही मूल्यांकन किया था - एक अपीलीय अदालत को तथ्यों के समवर्ती निष्कर्षों में तब तक हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए जब तक कि सबूतों के मूल्यांकन में स्पष्ट त्रुटि न हो (उद्धृत मामला: चंद्रप्पा बनाम कर्नाटक राज्य [(2007) 4 एससीसी 415]। (पैरा 21)

• सजा - क्या धारा 304 भाग-II आईपीसी लागू होती है? - बचाव पक्ष ने तर्क दिया कि अपराध इसके अंतर्गत आता है धारा 304 भाग-II आईपीसी, क्योंकि कोई पूर्वचिंतन नहीं था - अदालत ने फैसला सुनाया कि: लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता नंबर 1) ने जानबूझ कर सिर पर बार-बार वार किए, जिससे हत्या करने का इरादा साबित होता है - अन्य आरोपी, अपनी सक्रिय भागीदारी के आधार पर, धारा 149 आईपीसी** (पैरा 24) के तहत उत्तरदायी थे। लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता नंबर 1) को धारा 302 आईपीसी के तहत आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई - अन्य अपीलकर्ताओं (संख्या 2-6) को धारा 149/302 आईपीसी के तहत आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई - उद्धृत मामला: राजस्थान राज्य बनाम काशी राम [(2006) 12 एससीसी 254], पुलिचेरला नागराजू बनाम ए.पी. राज्य [(2006) 11 एससीसी 444] (पैरा 30)।

पटना उच्च न्यायालय का निर्णय/आदेश

समक्ष : माननीय श्री न्यायमूर्ति मोहित कुमार शाह

और

माननीय श्री न्यायमूर्ति नानी तागिया

मौखिक न्यायादेश

(द्वारा: माननीय श्री जस्टिस मोहित कुमार शाह)

तारीख: 06-03-2025

धारा 374 (2) और धारा 389 (2) के तहत वर्तमान अपील दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (जिसे आगे "दं. प्र. सं. " कहा जाएगा) मोतिहारी के विद्वान आठवें अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, पूर्वी चंपारण (जिसे आगे "विद्वान विचारण न्यायाधीश" कहा जाएगा) द्वारा सत्र विचारण सं. 936 / 2007 (आदापुर थाना मामला सं. 15 / 2007 से उत्पन्न) में क्रमशः दिनांक 27.08.2016 और 02.09.2016 को पारित दोषसिद्धि और सजा के आदेश के खिलाफ डायर की गई है। उक्त निर्णय द्वारा, विद्वान विचारण न्यायाधीश ने अपीलकर्ता सं. 1 को भारतीय दंड संहिता की धारा 147 और 302 (जिसे आगे "भा.द.सं. " कहा जाएगा) के तहत दोषी ठहराया है और उसे धारा 147 के तहत दो साल की कैद और धारा 302 के तहत आजीवन कारावास की सजा सुनाई है, साथ ही 10,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया है और ऐसा न करने पर अपीलकर्ता सं. 1 को अतिरिक्त छह महीने का कठोर कारावास भुगतने का निर्देश दिया गया है। जहां तक अपीलकर्ता सं. 2 से 6 का संबंध है, उन्हें धारा 147 और धारा 149/302 के तहत दोषी ठहराया गया है और उन्हें धारा 147 के तहत दो साल का कारावास और धारा 149/302 के तहत आजीवन कारावास और 10,000 रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई है और ऐसा न करने पर उन्हें छह महीने का अतिरिक्त कठोर कारावास भुगतने का निर्देश दिया गया है। दोनों सजाएं एक साथ चलाने का आदेश दिया गया है।

2. मामले के संक्षिप्त तथ्य यह हैं कि दिनांक 24.01.2007 को सुरेश प्रसाद (सुचक) द्वारा प्रभारी पुलिस पदाधिकारी, थाना-हरपुर (आदापुर, पूर्वी चम्पारण) के समक्ष लिखित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया, जिसमें उन्होंने बताया कि वे हरपुर के निवासी हैं तथा दिनांक 24.01.2007 को प्रातः लगभग 06:30 बजे उनके बड़े भाई शिव नाथ प्रसाद शौच करके आ रहे थे तथा जब वे राम दर्शन

के घर के दरवाजे पर पहुंचे तो लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1), अवधेश साह, महंथ साह (अपीलकर्ता सं. 5), विजय साह (अपीलकर्ता सं. 3), अजय साह (अपीलकर्ता सं. 4), राम एकबाल साह (अपीलकर्ता सं. 6), संजय साह, इनार साह (अपीलकर्ता सं. 2) तथा राम सेवक साह ने उन्हें घेर लिया, जो पहले से ही वहां बैठे थे। इसके बाद इन अभियुक्तों ने सुरेश प्रसाद (सुचक) के बड़े भाई शिव नाथ प्रसाद को पकड़ लिया और गाली-गलौज करते हुए मारपीट करने लगे। इसी बीच लक्ष्मण साह ने शिव नाथ प्रसाद के माथे पर लाठी से प्रहार कर दिया, जिससे उसका बड़ा भाई घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा। इसके बाद शेष अभियुक्तों ने भी लाठी व फट्टा से प्रहार कर दिया, जिससे उसका बड़ा भाई बेहोश हो गया। घटना के प्रत्यक्षदर्शी राम दर्शन साह, संतोष प्रसाद, विनोद साह, मनोज प्रसाद व राम एकबाल प्रसाद ने बीच-बचाव किया, जिससे उसकी जान बच गयी। बीच-बचाव के दौरान अवधेश साह ने राम दर्शन साह के दाहिने हाथ पर लाठी से प्रहार कर दिया, जिससे उसका दाहिना हाथ टूट गया, इसके बाद महंथ साह ने सुरेश प्रसाद (सुचक) के बड़े भाई की जेब से सब्जी बेचकर कमाए गए 600 रुपये निकाल लिए। सुचक सुरेश प्रसाद ने आगे बताया है कि पिछले दिन यानि 23.01.2007 को रात्रि में अभियुक्तगणों ने बिना किसी कारण के शंभू साह एवं बीरू कुमार के साथ मारपीट कर उन्हें घायल कर दिया था, जिसके बाद उन्होंने इसकी सूचना थानाध्यक्ष को दी थी, जिसके बाद थानाध्यक्ष रात्रि में आये थे तथा घायलों को देखा था। बताया गया है कि उक्त कारण से आज की घटना घटित हुई है तथा उनके बड़े भाई शिवनाथ प्रसाद की स्थिति गंभीर है, इसलिए डंकन अस्पताल, रक्सौल के चिकित्सक ने उन्हें आगे के इलाज के लिए पीएमसीएच, पटना रेफर कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया है कि उनके बड़े भाई शिवनाथ प्रसाद को बेहोशी की हालत में डंकन अस्पताल, रक्सौल में भर्ती कराया गया था।

3. सुरेश प्रसाद द्वारा दिनांक 24.01.2007 को लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत किए जाने के पश्चात, दिनांक 25.01.2007 को लगभग 12:30 बजे भारतीय दंड संहिता की धारा 147/148/149/341/323/325/307/379/504 के अंतर्गत आदापुर (हरपुर) थाना कांड सं. 15/2007 के अंतर्गत औपचारिक प्राथमिकी दर्ज की गई। चूंकि शिव नाथ प्रसाद की मृत्यु हो चुकी थी, इसलिए दिनांक 06.02.2007 के आदेश के तहत भारतीय दंड संहिता की धारा 302 जोड़ी गई।

जांच के बाद और अपीलकर्ताओं और अन्य के खिलाफ मामला सही पाए जाने पर, पुलिस ने 01.07.2007 को भा.द.सं. की धारा 147,148,149,323, 325, 341 और 302 के तहत आरोप पत्र प्रस्तुत किया था। विद्वान विचारण न्यायालय ने 06.07.2007 के आदेश द्वारा अपीलकर्ताओं और अन्य के खिलाफ भा.द.सं. की धारा 147,148,149,341,323,325 और 302 के तहत अपराधों का संज्ञान लिया था। इसके बाद, मामला सत्र न्यायालय को सौंप दिया गया और इसे सत्र विचारण सं. 936/2007 के रूप में क्रमांकित किया गया। आरोप पत्र और जांच के दौरान एकत्र की गई सामग्री को ध्यान में रखते हुए, विद्वान विचारण न्यायाधीश ने दिनांक 04.01.2008 के आदेश के तहत अपीलकर्ता सं. 1 के खिलाफ भा.द.सं. की धारा 147 और 302 के तहत और दिनांक 04.01.2008 के आदेश के तहत अपीलकर्ता सं. 2 से 6 के खिलाफ भा.द.सं. की धारा 147 और 302/149 के तहत आरोप तय किए, जिस पर उन्होंने दोषी न होने का दवा किया और मुकदमा चलाए जाने की मांग की।

4. विचारण के दौरान नौ गवाहों से पूछताछ की गई है। अ. सा. - 1 बैजनाथ प्रसाद मृतक के चचेरे भाई हैं, अ. सा. - 4 किशनवती देवी मृतक की पत्नी हैं और अ. सा. - 5 सुरेश प्रसाद वर्तमान मामले के सुचक हैं तथा मृतक के भाई भी हैं। अ. सा. - 6 श्रवण साह मृतक का चचेरा भाई है। अ. सा. - 7 गणेश राम जाँच अधिकारी हैं। अ. सा. - 8 डॉ. अरुण कुमार सिंह डॉक्टर हैं, जिन्होंने मृतक के शव का पोस्टमॉर्टम किया था और अ. सा. - 9 डॉ. एस. के. पासवान डॉक्टर हैं जिन्होंने घायलों की जांच की थी। जहां तक अ. सा.- 2 राम दर्शन साह (घायल) और अ. सा.- 3 महेंद्र साह का संबंध है, वे स्वतंत्र गवाह हैं।

5. अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता श्री बिन्ध्याचल सिंह ने श्री बिपिन कुमार सिंह, अधिवक्ता की सहायता से समर्पित किया कि दिनांकित 24.01.2007 की लिखित रिपोर्ट, जिसके कारण दिनांक 25.01.2007 को प्राथमिकी दर्ज की गई, सबसे प्रारंभिक संस्करण नहीं है। यह कहा गया है कि दिनांकित 24.01.2007 की लिखित रिपोर्ट पर सुरेश प्रसाद यानी सुचक ने हस्ताक्षर किए हैं, लेकिन यह स्वीकार किया जाता है कि यह उनके लिखित में नहीं है और अपने साक्ष्य के

दौरान, अ. सा. - 5 सुरेश प्रसाद ने स्वीकार किया है कि यह मेघनाथ प्रसाद द्वारा लिखा गया था, हालांकि, वर्तमान मामले में अभियोजन पक्ष द्वारा उनकी जांच नहीं की गई है। यह भी कहा गया है कि दिनांक 24.01.2007 की लिखित रिपोर्ट में इस आशय का कोई उल्लेख भी नहीं है कि प्राथमिकी सुचक को पढ़कर सुनाई गई थी, जिसने इसे समझा था और फिर इसे सही पाकर अपने हस्ताक्षर किए थे। यह भी कहा गया है कि अ. सा.- 5 सुरेश प्रसाद (सूचनाकर्ता) ने अपने साक्ष्य में कहा है कि उन्होंने 17 व्यक्तियों के विरुद्ध मामला दर्ज कराया था, हालांकि, दिनांक 25.01.2007 की प्राथमिकी केवल 9 व्यक्तियों के विरुद्ध है। यह भी कहा गया है कि अ. सा.-7 अर्थात् इस मामले के जांच अधिकारी ने अपने साक्ष्य में कहा है कि उन्होंने 24.01.2007 को रात्रि 11:15 बजे ही राम दर्शन साह का बयान दर्ज कर लिया था, अतः प्रथम कथन होने के कारण उसी के आधार पर संबंधित प्राथमिकी दर्ज की जानी चाहिए थी, तथापि, अभियोजन पक्ष द्वारा राम दर्शन साह का उक्त बयान प्रस्तुत नहीं किया गया है, जिससे अभियोजन पक्ष के मामले पर भी संदेह उत्पन्न होता है। इसके बाद यह तर्क दिया गया है कि प्राथमिकी दर्ज करने में देरी हुई है, जिसके लिए कोई उचित स्पष्टीकरण नहीं है, इसलिए अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत मामला मनगढ़ंत है। इस संबंध में यह कहा गया है कि यद्यपि घटना दिनांक 24.01.2007 को प्रातः लगभग 06:30 बजे घटित हुई थी तथा लिखित रिपोर्ट भी दिनांक 24.01.2007 को ही प्रभारी अधिकारी, हरपुर (आदापुर) पुलिस स्टेशन के समक्ष प्रस्तुत की गई थी, तथापि, प्राथमिकी दिनांक 25.01.2007 को लगभग 12:30 बजे दर्ज की गई तथा वास्तव में, गणेश राम (जांच अधिकारी) ने अपने साक्ष्य में कहा है कि यद्यपि उन्होंने दिनांक 24.01.2007 को ही जांच प्रारंभ कर दी थी तथा प्राथमिकी दर्ज करने के लिए प्रभारी अधिकारी, पुलिस स्टेशन आदापुर को लिखित रिपोर्ट भेज दी थी, तथापि, ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त अग्रेशन नोट देरी को कवर करने के लिए बाद में जोड़ा गया है तथा वास्तव में, प्राथमिकी अगले दिन अर्थात् दिनांक 25.01.2007 को दर्ज की गई तथा 27.01.2007 पर न्यायालय में देर से प्राप्त हुई थी। इस प्रकार, यह प्रस्तुत किया गया है कि स्पष्ट रूप से प्रश्नगत घटना का सबसे पुराना संस्करण छिपाया गया है और प्राथमिकी दर्ज करने के प्रयोजनों के लिए घटना का एक मनगढ़ंत संस्करण रिकॉर्ड पर लाया गया है। अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ वकील ने

आगे प्रस्तुत किया है कि अभियोजन पक्ष द्वारा जिन गवाहों की जांच की गई है, उन्हें हालांकि प्रत्यक्षदर्शी बताया गया है, लेकिन यह तथ्य नहीं है कि वे प्रत्यक्षदर्शी हैं, क्योंकि वे घटना के काफी बाद घटनास्थल पर पहुंचे थे। इस संबंध में, यह प्रस्तुत किया गया है कि जहां तक अ. सा.- 6 श्रवण साह का संबंध है, उन्होंने अपने साक्ष्य के पैराग्राफ सं. 2 में कहा है कि जिस समय सुरेश साह ने मामला दर्ज कराया था, वह बाहर थे और शाम को घर लौट आए थे। इस प्रकार, यह प्रस्तुत किया गया है कि अ. सा.- 6 निस्संदेह प्रत्यक्षदर्शी नहीं है। इसी प्रकार, यह कहा गया है कि जहां तक अ. सा.- 4 (किसनवती देवी) का संबंध है, उसने अपने साक्ष्य में पैरा सं. 1 में कहा है कि उसके शोर मचाने के बाद महेंद्र (अ. सा.- 3), संतोष, विनोद और सुरेश (अ. सा.- 5) वहां पहुंचे थे। इसलिए, यह प्रस्तुत किया गया है कि बेशक, अ. सा.- 3 और अ. सा.- 5 घटना के घटित होने के बाद घटनास्थल पर पहुंचे थे, इस प्रकार उन्हें प्रत्यक्षदर्शी नहीं कहा जा सकता है। अ. सा.- 4 (किसनवती देवी) ने अपने साक्ष्य में पैरा सं. 4 में यह भी कहा है कि जब वह घटनास्थल पर पहुंची थी, तो उसका पति बेहोश हो गया था, जिसका अर्थ है कि वह भी उस समय मौजूद नहीं थी जब उसके पति पर हमला किया गया था, इस प्रकार वह भी प्रत्यक्षदर्शी नहीं हो सकती है। अ. सा.- 4 ने अपने साक्ष्य में यह भी कहा है कि उसके शोर मचाने के बाद राम दर्शन (अ. सा.- 2) घटनास्थल पर पहुंचे थे। इस प्रकार, यह प्रस्तुत किया गया है कि अ. सा.- 2 को भी प्रत्यक्षदर्शी नहीं कहा जा सकता। संक्षेप में, अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ वकील का तर्क यह है कि उपरोक्त सभी गवाह सुनी-सुनाई बातों पर आधारित गवाह हैं, न कि प्रत्यक्षदर्शी, जैसा कि अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य से स्पष्ट है।

6. अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील ने आगे तर्क दिया है कि यह आश्चर्य की बात है कि हालांकि घटना का स्थान विचाराधीन गाँव के बीच में है, फिर भी अभियोजन पक्ष ने केवल इच्छुक गवाहों से पूछताछ की है न कि स्वतंत्र गवाहों से, जो आगे अभियोजन पक्ष के मामले के बारे में संदेह पैदा करता है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि घटना के काफी समय बीतने के बाद पुलिस द्वारा अधिकांश गवाहों से पूछताछ की गई है जिससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि सही संस्करण रिकॉर्ड पर नहीं आया है। अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील ने आगे प्रस्तुत किया है कि

अभियोजन पक्ष के साक्ष्य में यह आया है कि घटना के स्थान पर 24-25 व्यक्ति थे, हालाँकि किसी भी स्वतंत्र गवाह से पूछताछ नहीं की गई है। यह भी तर्क दिया जाता है कि अभियोजन पक्ष की कहानी चिकित्सा साक्ष्य के साथ पुष्टि नहीं करती है। अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील ने अ. सा. - 8 डॉ. अरुण कुमार सिंह के साक्ष्य का हवाला देते हुए कहा है कि मृतक के सिर पर लाठी प्रहार की कोई बाहरी चोट नहीं पाई गई है, इस प्रकार घटना का तरीका झूठा साबित होता है यह भी कहा गया है कि अ. सा.- 9 डॉ. एस. के. पासवान ने कहा है कि चोटें 24 घंटे के भीतर आई हैं, हालांकि, तथ्य यह है कि राम दर्शन साह को 24.01.2007 को सुबह लगभग 6:30 बजे चोट पहुंचाई गई थी, जबकि डॉ. एस. के. पासवान ने घायल व्यक्ति, अर्थात् राम दर्शन साह की जांच 25.01.2007 को दोपहर 1:45 बजे की थी, इसलिए घटना का तरीका साबित नहीं हुआ। इस संबंध में अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 45 का हवाला दिया है और ए.आई.आर. 1960 एससी 706 (**श्रीमती नागेंद्र बाला मित्रा एवं अन्य बनाम सुनील चंद्र रॉय एवं अन्य**) में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का भी हवाला दिया है, जिसमें कहा गया है कि मेडिकल गवाह का महत्व केवल प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह एक स्वतंत्र गवाही भी है, क्योंकि यह अन्य मौखिक साक्ष्यों से बिल्कुल अलग कुछ तथ्य स्थापित कर सकती है। अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने यह भी कहा है कि घटना का मकसद साबित नहीं हुआ है। इस प्रकार, संक्षेप में अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य से पता चलता है कि कोई भी गवाह चश्मदीद नहीं है, इसलिए उनके साक्ष्य विश्वसनीय या भरोसेमंद नहीं कहे जा सकते, इस प्रकार अपीलकर्ताओं की सजा गलत है। अंत में, यह प्रस्तुत किया गया है कि यदि अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत सभी साक्ष्यों को उनके अंकित मूल्य पर सत्य मान लिया जाए, तो भी यह स्पष्ट होगा कि यद्यपि एक ही चोट है, लेकिन 12 अभियुक्तों को दोषी ठहराया गया है और यहां तक कि अपीलकर्ता सं. 1 ने बार-बार वार नहीं किया था, इसलिए उसका मृतक को मारने का कोई इरादा नहीं था, इस प्रकार वर्तमान मामला गैर इरादतन हत्या के दायरे में आता है। इस प्रकार, यह प्रस्तुत किया गया है कि दोषसिद्धि और सजा का निर्णय और आदेश अपास्त किए जाने योग्य है।

7. *इसके विपरीत*, राज्य के विद्वान सा लो अ , श्री दिलीप कुमार सिन्हा ने प्रस्तुत किया है कि अपीलकर्ता सं. 1 ने मृतक के सिर पर *लाठी* से प्रहार किया है और डॉक्टर के साक्ष्य, जिन्होंने पोस्टमॉर्टम किया है, यानी पीडब्लू 8 से पता चलेगा कि मृत्यु का कारण सिर की चोट है, इसलिए अपीलकर्ता सं. 1 द्वारा किया गया अपराध रिकॉर्ड पर मौजूद साक्ष्य से पुष्ट होता है। यह भी प्रस्तुत किया गया है कि जहां तक 24.01.2007 की लिखित रिपोर्ट के आधार पर एफ.आई.आर. दर्ज करने का सवाल है, इसमें कोई कमी नहीं है क्योंकि पुलिस द्वारा 24.01.2007 की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद उसे प्रभारी अधिकारी, हरपुर (आदापुर) पुलिस स्टेशन को भेज दिया गया था, जिसके बाद 25.01.2007 को 12:30 बजे प्राथमिकी दर्ज की गई थी। यह भी कहा गया है कि वर्तमान मामला केस और काउंटर केस से उत्पन्न हुआ है। यह तर्क दिया गया है कि रिश्तेदारों और परिवार के सदस्यों के साक्ष्य को खारिज नहीं किया जा सकता है, हालांकि किसी भी मामले में दोषी/अभियुक्त के संबंध में किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले उनकी सावधानीपूर्वक जांच और मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है। इस प्रकार, यह प्रस्तुत किया गया है कि साक्ष्य को केवल इस आधार पर अविश्वास नहीं किया जा सकता है कि गवाह एक-दूसरे या मृतक के रिश्तेदार हैं और यदि साक्ष्य में सच्चाई है, वह ठोस, विश्वसनीय और भरोसेमंद है, तो उस पर भरोसा किया जा सकता है और निश्चित रूप से किया जाना चाहिए। इस संबंध में राज्य के विद्वान सा लो अ द्वारा **योगेश सिंह बनाम महाबीर सिंह एवं अन्य** के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का संदर्भ दिया गया है, जिसकी रिपोर्ट (2017) 11 एससीसी 195 में की गई है। राज्य के विद्वान सा लो अ द्वारा आगे तर्क दिया गया है कि वर्तमान मामले में अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य विश्वसनीय और भरोसेमंद हैं, इसलिए अपीलकर्ताओं की दोषसिद्धि को बरकरार रखने के उद्देश्य से उन पर भरोसा किया जाना उचित है। यह भी प्रस्तुत किया गया है कि यदि प्रत्यक्ष साक्ष्य उपलब्ध है, तो मकसद ज्यादा भूमिका नहीं निभाता है। इस संबंध में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा **शिवाजी चिंताप्पा पाटिल बनाम महाराष्ट्र राज्य** के मामले में दिए गए निर्णय पर भरोसा किया गया है, जो (2021) 5 एससीसी 626 में रिपोर्ट किया गया है। यह भी कहा गया है कि सभी गवाह प्रत्यक्षदर्शी हैं और यह कहना गलत है कि वे प्रत्यक्षदर्शी नहीं हैं, जैसा कि रिकॉर्ड

पर उनके साक्ष्य से स्पष्ट होगा। यह भी कहा गया है कि अभियोजन पक्ष द्वारा पेश किए गए साक्ष्य में कोई भौतिक विरोधाभास नहीं है और अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य सुसंगत और ठोस हैं। इसके बाद यह कहा गया है कि वर्तमान मामला भा.द.सं. की धारा 304 भाग-॥ का मामला नहीं है क्योंकि अपीलकर्ता सं. 1 ने मृतक के सिर पर तीन लाठियों से वार किया था जिससे उसकी बाद में मौत हो गई। जहां तक अपीलकर्ता सं. 2 से 6 का संबंध है, वे गैरकानूनी सभा के सदस्य हैं, अतः उन्हें भा.द.सं. की धारा 302 के तहत, धारा 149 के सहयोग से दोषी ठहराया गया है। इस प्रकार, राज्य के विद्वान सा लो अ द्वारा यह प्रस्तुत किया गया है कि अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य में कोई विरोधाभास नहीं है, जो अपनी गवाही में सुसंगत हैं, विद्वान विचारण न्यायाधीश द्वारा दिए गए दोषसिद्धि के फैसले और सजा के आदेश में किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है, इसलिए अपील खारिज किए जाने योग्य है।

8. पक्षों के विद्वान वकील को सुनने के अलावा, हमने मौखिक और दस्तावेजी दोनों साक्ष्यों का बारीकी से अध्ययन किया है। आगे बढ़ने से पहले, साक्ष्य पर संक्षिप्त रूप से चर्चा करना आवश्यक है।

9. अ. सा.- 1 बैजनाथ प्रसाद मृतक का चचेरा भाई है और उसने अपने बयान में कहा है कि घटना एक वर्ष एक माह पूर्व सुबह 6:30 बजे की है, उस समय वह शौच के लिए जा रहा था और जब वह राम दर्शन साह के घर के दरवाजे पर पहुंचा तो उसने देखा कि शिव नाथ साह को श्री लाल साह, ओम प्रकाश साह, मदन साह, अंबिका साह, लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1), महंथ साह (अपीलकर्ता सं. 5), रामएकबाल साह (अपीलकर्ता सं. 6), महावीर यादव, पन्ना लाल साह, संजय साह, इनार साह (अपीलकर्ता सं. 2), बिगन साह और अजय साह (अपीलकर्ता सं. 4) ने घेर लिया है। अ. सा. - 1 ने आगे कहा है कि अवधेश साह, अशोक साह, जवाहर भगत और राम सेवक साह लाठी से हमला कर रहे थे और वे सभी अपने हाथों में लाठी पकड़े हुए थे। उन्होंने यह भी कहा है कि सबसे पहले लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1) ने शिव नाथ साह पर दो बार लाठी से हमला किया था, जिसके बाद वह गिर गए थे और फिर सभी लोगों ने उन पर हमला भी किया था।

शिव नाथ साह तब बेहोश हो गए थे और जब शोर मचाया गया तो राम दर्शन साह (अ. सा.- 2) उन्हें बचाने के लिए वहां गए थे और अवधेश साह ने भी उनके दाहिने हाथ पर लाठी से प्रहार किया, जिससे उनका हाथ टूट गया। अ. सा. - 1 ने आगे कहा है कि इस घटना को मनोज प्रसाद, रामएकबाल साह, संतोष प्रसाद, हरदयाल साह, महेंद्र साह (अ. सा. - 3), हीरालाल साह, अशोक साह और श्रवण साह (अ. सा. - 6) ने देखा था। इसके बाद, गाँव से कई लोग आए और घायल को बेहोशी की हालत में डंकन अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उसकी हालत ठीक नहीं होने के कारण उसे पीएमसीएच, पटना रेफर कर दिया गया। अ. सा. - 1 ने यह भी कहा है कि उक्त घटना से एक दिन पहले बच्चों के बीच झगड़ा हुआ था और फिर शिव नाथ साह ने पुलिस स्टेशन को सूचित किया था और उसी के कारण, महंत साह और रामएकबाल साह ने कहा कि उन्होंने अपनी सीमा पार कर ली है। उसने कठघरे में खड़े अभियुक्त व्यक्तियों को पहचान लिया था। प्रतिपरीक्षण में अ. सा. - 1 ने कहा है कि राम बालक साह, हीरा साह और यादव लाल साह उनके भाई हैं और वे राम बालक साह के पुत्र हैं। अ. सा. - 1 ने आगे कहा है कि शिव नाथ साह की मृत्यु पटना में हुई थी और श्रवण साह (अ. सा. - 6) ने भी अपना फर्दबयान वहां दाखिल किया था। अ. सा. - 1 ने कहा है कि वह यह नहीं बता सकता कि उक्त फर्दबयान में कितने आरोपियों को नामजद किया गया है, हालांकि वर्तमान मामले में 17 आरोपी हैं, जो सभी सह-ग्रामीण हैं, जिनमें से नौ का नाम लिखित रिपोर्ट में दर्ज है। अ. सा. - 1 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में यह भी कहा है कि उसका बयान पुलिस द्वारा दर्ज किया गया था और उसने पुलिस के सामने कहा था कि मृतक शिव नाथ साह के गिरने के बाद, महंत साह (अपीलकर्ता सं. 5), विजय साह (अपीलकर्ता सं. 3), अजय साह (अपीलकर्ता सं. 4) और अन्य लोगों ने भी लाठी से उस पर हमला किया था। अ. सा.- 1 ने खुलासा किया है कि घटना स्थल किशोरी साह, भिखारी साह, राम दर्शन साह (अ. सा.- 2) और राम सूरत तिवारी के घरों से घिरा हुआ है। अ. सा. - 1 ने यह भी कहा है कि आरोपी व्यक्तियों का घर घटना स्थल से आधा किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और जब वह घटना स्थल पर पहुंचे तो वहां मनोज साह, हरदयाल साह, महेंद्र साह (अ. सा. - 3), विनोद साह, हीरालाल साह, संतोष साह, राम दर्शन साह (अ. सा. - 2), श्रवण साह (अ. सा. - 6), सुरेश

साह (अ. सा. - 5) और अन्य लोग मौजूद थे। उस समय शिव नाथ साह सड़क के दक्षिण की ओर गिर गए थे, लोगों ने शिव नाथ साह को उठाया था और उन्हें इलाज के लिए डॉक्टर के पास ले जा रहे थे, जिसके बाद वे भी उनके साथ थे। अ. सा. - 1 ने कहा है कि उन्होंने शिव नाथ के शरीर पर चोटों को देखा था और शिव नाथ के शरीर पर अनगिनत लाठी प्रहार किए गए थे। अ. सा.-1 ने आगे कहा है कि जहां शिवनाथ गिरा था वहां खून नहीं गिरा था और राम दर्शन (अ. सा.-2) के दाहिने हाथ में फ्रैक्चर था, जिसके बाद उस पर प्लास्टर किया गया और उसने देखा था कि उसके पूरे हाथ पर प्लास्टर किया हुआ था। अ. सा. - 1 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में यह भी कहा है कि उन्होंने मृतक शिव नाथ साह के शरीर और माथे के साथ-साथ उनकी नाक और पीठ पर भी लालिमा देखी थी, हालांकि उन्होंने यह नहीं गिना था कि उन्हें कितनी जगहों पर चोटें आई थीं। उन्होंने कहा है कि पटना में हुई घटना के 5-6 दिन बाद शिव नाथ की मृत्यु हो गई। अ. सा. - 1 ने यह भी कहा है कि श्रवण (अ. सा. - 6) शिव नाथ का भाई है और वह घटना की तारीख को गाँव में मौजूद था। इसके बाद अ. सा. - 1 ने कहा कि श्रवण भी शिव नाथ का इलाज कराने के लिए डंकन अस्पताल गए थे और वह भी उनके साथ गए थे। उन्होंने कहा है कि सुरेश प्रसाद ने एफ. आई. आर. दर्ज करने के लिए लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत की थी और श्रवण का बयान पटना में दर्ज किया गया था, लेकिन वह यह नहीं कह सकते हैं कि उन्होंने उक्त बयान में किसका नाम लिया था। अ. सा. - 1 ने आगे कहा है कि शिव नाथ को उनकी मृत्यु से पहले होश नहीं आया था। अ. सा. - 1 ने यह भी कहा है कि 2007 का अदापुर थाना मामला सं.14 वाला जवाबी मामला दायर किया गया था। अ. सा. - 1 ने यह भी कहा है कि राम दर्शन का उपचार अदापुर में किया गया था, लेकिन उन्हें याद नहीं है कि उन्होंने राम दर्शन (अ. सा. - 2) के शरीर पर चोटें देखे थे या नहीं, हालांकि वे घटना के 5-7 दिनों के बाद राम दर्शन से मिले थे और फिर तब उसने केवल उसके हाथ पर प्लास्टर देखा था।

10. अ. सा.- 2 राम दर्शन साह ने अपने बयान में कहा है कि घटना एक वर्ष सात माह पूर्व सुबह करीब साढ़े छह बजे की है और उस समय वह अपने घर पर था, लेकिन घर के बाहर आने पर उसने देखा कि शिव नाथ साह को 17-18 लोगों ने घेर रखा है, जिनके नाम मोहन साह, विजय

साह (अपीलकर्ता सं. 3), अजय साह (अपीलकर्ता सं. 4), जवाहिर साह, अवधेश साह, अशोक साह, रामएकबाल साह (अपीलकर्ता सं. 6), राम सेवक साह, लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1), शिव लाल साह, ओम प्रकाश साह, महावीर यादव, अंबिका साह, मदन साह, पन्ना लाल साह, इनार साह (अपीलकर्ता सं. 2) और संजय साह हैं। अभियुक्त व्यक्ति गाली दे रहे थे और अवधेश साह ने मारने का आदेश दिया था, जिसके बाद लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1) ने शिव नाथ साह के माथे पर तीन बार लाठी से वार किया था, जिससे वह नीचे गिर गया और जब वह वहाँ पहुँचा तो अवधेश ने उस पर लाठी से भी हमला किया और फिर सभी अभियुक्त व्यक्तियों ने लाठी, मुट्ठी, थप्पड़ और पैरों से हमला करना शुरू कर दिया था। इसके बाद, शिव नाथ साह को अस्पताल ले जाया गया और बाद में, उन्हें पता चला कि घटना की तारीख के 5-6 दिनों के बाद, अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई थी। अ. सा. - 2 ने कठघरे में खड़े अभियुक्त व्यक्तियों को पहचाना था। प्रतिपरीक्षण में, अ. सा. - 2 ने कहा है कि विजय साह द्वारा 2007 का अदापुर थाना मामला सं. 14 के साथ जवाबी मामला दायर किया गया था जिसमें वह और उनका तीन बेटे आरोपी हैं। अ. सा. - 2 ने आगे कहा है कि पुलिस ने उसका बयान दर्ज किया था और उसने पुलिस के सामने जवाहिर, अशोक, श्रीलाल, ओम प्रकाश, महावीर, पन्ना लाल और अंबिका के नामों का खुलासा किया था। घटना की रात को पुलिस ने उसका बयान दर्ज किया था। अ. सा. - 2 ने यह भी कहा है कि उन्हें नहीं पता कि मामला कहां लिखा गया था। अ. सा. - 2 ने आगे कहा है कि उसने पुलिस को बताया था कि हल्ला (अलार्म) सुनने के बाद वह घटना स्थल पर गया था और वहां उस पर हमला भी किया गया था जिससे उसका हाथ टूट गया था। अ. सा. - 2 ने इसके बाद कहा कि उन्हें एक स्थान पर चोट लगी थी, जो लाठी से लगी थी और उनका इलाज अदापुर में किया गया था। अ. सा. - 2 ने आगे कहा है कि उन्होंने न तो एक्स-रे रिपोर्ट दी थी और न ही जांच अधिकारी को चोट की रिपोर्ट दी थी। अ. सा. - 2 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में यह भी कहा है कि जब वह घटनास्थल पर पहुंचे तो वहां लोग मौजूद थे, शिव नाथ साह खड़े थे लेकिन उन्होंने अपने शरीर पर कोई चोट नहीं देखी और वहां पहुंचने के तीन-चार मिनट बाद उन्हें चोट लगी थी। अ. सा. - 2 ने आगे कहा है कि जब आरोपी व्यक्ति शिव नाथ पर हमला कर रहे थे, तो किसी ने उन्हें बचाने की

कोशिश नहीं की और शिव नाथ के खड़े होने पर उन पर लाठी, थप्पड़ और पैरों से हमला किया गया। उन्होंने यह भी कहा है कि वह यह नहीं बता सकते कि शिव नाथ के शरीर के किस हिस्से पर चोट लगी थी, और उन्होंने उन चोटों को नहीं देखा था जो उन्हें लगी थीं, हालाँकि, उन्हें दाहिने टेम्पोरल क्षेत्र में उनके सिर पर लाठी से मारा गया था। दूसरा लाठी प्रहार गर्दन के ऊपर किया गया था। अ. सा. - 2 ने यह भी कहा है कि उन्होंने शिव नाथ के सिर पर कोई चोट नहीं देखी है। उन्होंने कहा है कि तीसरे लाठी प्रहार के बाद वह नीचे गिर गए थे। उन्होंने यह भी कहा है कि वह यह नहीं बता सकते कि शिव नाथ के सिर के अलावा शरीर के किस हिस्से पर चोट लगी थी और उन्हें लगी चोटों की संख्या के बारे में भी नहीं बता सकते। उन्होंने कहा है कि इसके बाद परिवार के सदस्य आए और शिव नाथ को ले गए। अ. सा. - 2 ने आगे कहा है कि उसका इलाज गाँव में नहीं किया गया था और वह यह नहीं कह सकते कि पुलिस ने शिव नाथ का बयान दर्ज किया था या नहीं।

11. अ. सा.- 3 महेंद्र साह ने अपने बयान में कहा है कि घटना 8-9 महीने पहले की है, सुबह करीब 6:00 बजे जब वह अपने घर पर था और उसने शोरगुल सुना तो वह राम दर्शन (अ. सा.-2) के घर पहुंचा और देखा कि मारपीट हो रही थी और राम सेवक, रामएकबाल (अपीलकर्ता सं. 6), महंथ साह (अपीलकर्ता सं. 5), अजय साह (अपीलकर्ता सं. 4), विजय साह (अपीलकर्ता सं. 3), अवधेश साह, अशोक साह, जवाहर साह, पन्ना लाल साह, संजय साह, इनार साह (अपीलकर्ता सं. 2), अंबिका साह, मदन साह, महावीर राउत, लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1), श्रीलाल साह और ओम प्रकाश साह शिव नाथ साह पर हमला कर रहे थे। इसके बाद, अवधेश साह ने मारने का आदेश दिया था, जिसके बाद लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1) ने अपनी लाठी से हमला किया था और शिव नाथ साह के माथे पर 2-3 बार हमला किया था और फिर सभी लोगों ने उन पर हमला करना शुरू कर दिया, जिसके बाद वह बेहोश हो गया। इसके बाद, राम दर्शन साह (पीडब्लू. 2) पर भी हमला किया गया और उनके हाथ पर लाठी से वार किया गया, जो अवधेश साह द्वारा किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप उनका हाथ टूट गया था। इसके बाद, शिव नाथ साह को पटना ले जाया गया और छह दिन बाद वहाँ उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने यह भी कहा है कि पहले बच्चों के

बीच झगड़ा हुआ था और उक्त घटना के कारण हमला हुआ था। अ. सा. - 3 ने कठघरे में खड़े अभियुक्त व्यक्तियों को पहचाना था। अपनी प्रतिपरीक्षण में अ. सा. - 3 ने कहा है कि कोई पूर्व शत्रुता नहीं थी और राम दर्शन के घर से उनका घर 1-2 घरों की दूरी पर स्थित है। अ. सा. - 3 ने आगे कहा है कि अभियुक्त व्यक्तियों ने एक जवाबी मामला दायर किया था और घटना के एक महीने बाद उनका बयान दर्ज किया गया था। अ. सा. - 3 ने यह भी कहा है कि अभियुक्तों के घर घटना स्थल के 15-20 घरों की दूरी पर स्थित हैं। अ. सा. - 3 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में आगे कहा है कि वह यह नहीं कह सकते कि जब वह घटनास्थल पर गया था तो वहां कितने लोग मौजूद थे और उस समय शिव नाथ साह जमीन पर नहीं गिरा था, साथ ही उसने शिव नाथ साह के शरीर पर लगी चोटों को भी देखा था, जो तीन स्थानों पर लगी थीं और तीनों चोटें अलग-अलग थीं। उन्होंने कहा है कि घटना स्थल पर पहुंचने के तुरंत बाद शिव नाथ साह लाठी लगने से गिर गए थे। शिव नाथ को लाठी के तीन वार लगे। उन्होंने यह भी कहा है कि वह यह नहीं कह सकते कि शिव नाथ पर कितने लाठी प्रहार किए गए थे। इसके बाद उन्होंने कहा कि गिरने पर उनके सिर पर चोट नहीं लगी। अ. सा. - 3 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में यह भी कहा है कि 17 लोग लाठी से हमला कर रहे थे और यह 15-20 मिनट तक जारी रहा। उन्होंने कहा है कि खून नहीं बह रहा था और शिव नाथ सड़क पर गिर गए थे, लेकिन उन्होंने अपने शरीर पर लाठी चलाने का कोई संकेत नहीं देखा था। उन्होंने कहा है कि राम दर्शन (अ. सा. - 2) पर एक लाठी प्रहार किया गया था, जिनका इलाज डंकन अस्पताल, रक्सौल में किया गया था। शिव नाथ बेहोश हो गए थे और अ. सा. - 3 ने उनसे बात नहीं की थी। जहाँ तक राम दर्शन की बात है, उनके हाथ को डेढ़ महीने के लिए प्लास्टर किया गया था। अ. सा. - 3 ने कहा है कि उनका बयान एक महीने के बाद दर्ज किया गया था। अ. सा. - 3 ने आखिरकार कहा कि वह यह नहीं कह सकते कि घटना के कितने दिनों बाद सुरेश के भाई श्रवण (अ. सा. - 6) ने मामला दर्ज कराया था।

12. अ. सा.- 4 किसनावती देवी मृतक की पत्नी है और उसने अपने बयान में कहा है कि घटना करीब दो साल पुरानी है, दिन बुधवार सुबह करीब 06:30 बजे जब उसका पति गवास (पुरुषों के बैठने का स्थान) जा रहा था। अ. सा.- 4 ने आगे कहा है कि जब वह राम दर्शन

(पीडब्लू 2) के घर के गवास के सामने गई तो उसने देखा कि 17 लोगों ने मृतक को घेर लिया था, जिनमें मोहन साह, विजय साह (अपीलकर्ता सं. 3), अजय साह (अपीलकर्ता सं. 4), जवाहर साह, अवधेश साह, अशोक साह, रामएकबाल साह (अपीलकर्ता सं. 6), राम सेवक साह, लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1), शिव लाल साह, ओम प्रकाश साह, महावीर यादव, अंबिका साह, मोनिका साह, मदन साह, पन्ना लाल साह, इनार साह (अपीलार्थी सं. 2) और संजय साह शामिल थे। इसके बाद, महंथ साह (अपीलकर्ता सं. 5) ने यह कहते हुए हत्या का आदेश दिया था कि शिव नाथ ने पुलिस स्टेशन में उसके खिलाफ बयान दिया है, जिसके बाद लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1) ने अपने पति के सिर पर फट्टा (बांस की छड़ी) से मारा था और चोट लगने पर वह नीचे गिर गया और फिर अन्य सभी आरोपी व्यक्तियों ने लाठी (बांस की छड़ी) से उस पर हमला करना शुरू कर दिया। इसके बाद, राम दर्शन साह (अ. सा.- 2) उन्हें बचाने के लिए वहां आए, लेकिन उन पर लाठी से हमला भी किया गया, जिसके परिणामस्वरूप उनका हाथ टूट गया। अ. सा.- 4 ने आगे बताया कि वह भी अपने पति को बचाने गई थी, लेकिन उसे धक्का दे दिया गया और फिर उसने शोर मचाया, जिसके बाद महेंद्र (अ. सा.- 3), संतोष, विनोद और सुरेश (अ. सा.- 5) वहां आ गए और फिर आरोपी भाग गए। अ. सा. - 4 ने इसके बाद कहा कि उनके पति को इलाज के लिए डंकन अस्पताल ले जाया गया था, जहां डॉक्टर ने उन्हें दूसरी जगह ले जाने के लिए कहा था और उस समय उनके पति को होश नहीं था। अ. सा.- 4 ने यह भी कहा है कि उसके पति को फिर पीएमसीएच, पटना ले जाया गया और इलाज के दौरान 5-6 दिनों के बाद उनकी मृत्यु हो गई। उसने कठघरे में खड़े अभियुक्त व्यक्तियों को पहचान लिया था। अपनी प्रतिपरीक्षण में, अ. सा.- 4 ने कहा है कि उसने पुलिस के सामने अपना बयान दिया था और ओम प्रकाश और अंबिका का नाम लिया था और अपने बयान में यह भी कहा था कि लक्ष्मण (अपीलकर्ता सं. 1) ने उसके पति पर दो बार लाठी से हमला किया था। उसने यह भी कहा है कि घटना के दो दिन बाद उसका बयान दर्ज किया गया था और पुलिस ने उससे केवल एक बार पूछताछ की थी। उसने यह भी कहा है कि घटना के बाद उसे अपने पति से बात करने का कोई मौका नहीं मिला। उसने कहा है कि उसके पति के साथ कोई दुश्मनी नहीं थी। उन्होंने यह भी कहा है कि गवास पूर्व की ओर राम

दर्शन (पीडब्लू 2) के घर से 2-3 बांस की लंबाई की दूरी पर स्थित है। उन्होंने आगे कहा कि सबसे पहले, उनके बहनोई सुरेश ने हरपुर पुलिस स्टेशन में नौ अभियुक्तों के खिलाफ मामला दर्ज किया था और 6 दिन बाद श्रवण साह (अ. सा.- 6) ने 15 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। अ. सा. - 4 ने यह भी कहा है कि घटना की तारीख को श्रवण वहाँ नहीं था और वह बाद में आया था। उन्होंने कहा है कि घटना स्थल के पास राम दर्शन (पीडब्लू 2) और किशोरी साह के घर स्थित हैं। उसने यह भी कहा है कि वह अपने घर और गवास में रहती है जहाँ एक भैंस भी रहती है। उसकी प्रतिपरीक्षण के पैराग्राफ सं. 4 में, अ. सा. - 4 ने कहा है कि घटना स्थल की ओर जाते समय उसका पति आगे बढ़ रहा था और वह उसका पीछा कर रही थी और फिर उसके पति को आरोपी व्यक्तियों ने घेर लिया और उस पर हमला किया, जिसके बाद वह जमीन पर गिर गया था। उसने यह भी कहा है कि जब वह अपने पति के पास पहुंची तो वह बेहोश हो गया था और उस समय लोगों ने उसके पति को घेर लिया था। इसके बाद उसने कहा कि जब आरोपी व्यक्ति उसके साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे, तो राम दर्शन (पीडब्लू 2) वहां मौजूद नहीं थे और जब उसने शोर मचाया तो राम दर्शन 10 मिनट बाद आ गए थे। इसके बाद, राम दर्शन (पीडब्लू. 2) ने शिव नाथ को उठाया और अस्पताल ले गए। अ. सा. - 4 ने यह भी कहा है कि राम दर्शन (अ. सा. - 2) के आने से पहले ही संतोष और अन्य आ चुके थे। अ. सा. - 4 ने यह भी कहा है कि उनके पति के माथे पर तीन चोटें आई थीं। उसने यह भी कहा है कि पूरे शरीर पर चोट के निशान भी थे। अ. सा.- 4 ने यह भी कहा है कि शिव नाथ के शरीर से खून नहीं गिरा था और उसकी मौत के बाद उसने उसका शव देखा था, लेकिन वह यह नहीं बता सकती कि चोट कहां-कहां लगी थी, क्योंकि चोटों पर दवा लगाई गई थी। उसने यह भी कहा है कि उसके पति की अस्पताल में मौत हो गई और घटना के बाद उसे होश नहीं आया।

13. अ. सा. - 5 सुरेश प्रसाद, जो मृतक के भाई हैं और इस मामले के सुचक हैं, ने अपने बयान में कहा है कि यह घटना सुबह लगभग 6:30 बजे की है, जब वह अपने घर के दरवाजे पर थे, शिव नाथ आराम से वापस आ रहे थे और जब वह राम दर्शन के घर के दरवाजे पर पहुंचे तो आरोपी व्यक्तियों में लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1), श्री लाल साह, ओम प्रकाश साह, महांत साह

(अपीलकर्ता सं. 5), बिगन साह, अजय साह (अपीलकर्ता सं. 4), राम सेवक साह, रामएकबाल साह (अपीलकर्ता सं. 6), जवाहर साह, अवधेश साह, अशोक साह, पन्ना लाल साह, अपीलार्थी सं. 2), मंगल साह, मदन साह, अंबिका साह और महावीर यादव लाठी और फट्टा से लैस होकर पहले से ही वहां मौजूद थे। इसके बाद अवधेश और महंथ (अपीलकर्ता सं. 5) ने शिव नाथ को मारने का आदेश दिया क्योंकि उसने पुलिस को बुलाया था, जिसके बाद लक्ष्मण (अपीलकर्ता सं. 1) ने शिव नाथ के सिर पर 2-3 लाठियों से वार किया और फिर वह गिर गया, जिसके बाद सभी आरोपियों ने उन पर भी हमला किया, हालांकि जब राम दर्शन (अ. सा.- 2) उन्हें बचाने गए, तो उन्हें लाठी से भी मारा गया, जिसके परिणामस्वरूप उसका दाहिना हाथ फ्रैक्चर हो गया। इस बीच, कई लोग वहाँ पहुँच गए थे जिसके परिणामस्वरूप आरोपी लोग भाग गए। अ. सा. - 5 के भाई की हालत गंभीर हो गई थी, इसलिए उन्हें डंकन अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टर ने उन्हें पीएमसीएच, पटना रेफर कर दिया और फिर उन्हें पीएमसीएच, पटना ले जाया गया, जहां उपचार के दौरान छह दिनों के बाद उनकी मृत्यु हो गई। अ. सा.-5 ने आगे कहा है कि फर्दबयान मेघनाथ प्रसाद द्वारा लिखा गया था और लिखने के बाद, उन्होंने इसे पढ़कर सुनाया था और फिर उन्होंने उस पर अपने हस्ताक्षर किए थे, जिसे उन्होंने पहचान लिया है और इसे प्रदर्श-1 के रूप में चिह्नित किया गया है। अ. सा.- 5 ने यह भी कहा है कि घटना से एक दिन पहले, बच्चों के बीच झगड़ा होने के कारण प्रभारी अधिकारी आये थे। प्रतिपरीक्षण में, अ. सा. - 5 ने कहा है कि विजय साह द्वारा एक जवाबी मामला दायर किया गया है जिसमें वह एक आरोपी है। उन्होंने यह भी कहा है कि श्रवण साह ने हरपुर पुलिस स्टेशन में भी मामला दर्ज किया था और 31.01.2007 पर वर्तमान घटना के संबंध में पटना में भी एक मामला दर्ज किया है। अ. सा.- 5 ने आगे कहा है कि यह मामला पुलिस थाने में उसकी लिखित रिपोर्ट के आधार पर दर्ज किया गया था, जिसे मेघनाथ प्रसाद ने लिखा था और 24.01.2007 को रात करीब 9:00 बजे पुलिस के समक्ष दर्ज किया गया था। उसने आगे कहा है कि पुलिस स्टेशन उसके घर से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर है और उसने 17 लोगों के खिलाफ लिखित रिपोर्ट दर्ज कराई थी। अ. सा. - 5 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में यह भी कहा है कि राम दर्शन (अ. सा. - 2) उसका भाई है, गवाह बैजनाथ (अ. सा. - 1) उसका चचेरा भाई है और

रामएकबाल का बेटा संतोष है, दोनों उसके द्वारा दायर मामले में आरोपी हैं। अ. सा. - 5 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में यह भी कहा है कि गवाह राम दर्शन (अ. सा. - 2) उसका चचेरा भाई है। उन्होंने कहा है कि उसी दिन जवाबी मामला दायर किया गया था। अ. सा. - 5 ने आगे कहा है कि घटना स्थल के पास, किशोरी साह, बिखारी साह, राम सूरत तिवारी, बहादुर पंडित, ध्रुव साह, रामाशीष महतो और रामानंद राउत के घर मौजूद थे, हालांकि, वे वर्तमान मामले में गवाह नहीं हैं। अपनी प्रतिपरीक्षण के पैराग्राफ-10 में, अ. सा. - 5 ने कहा है कि जब वह घटना स्थल पर पहुंचे, तो शिव नाथ साह खड़े थे और उनके शरीर पर कोई चोट नहीं थी, हालांकि चोट लगने के बाद वे नीचे गिर गए थे और उनके सिर पर 3 से 4 बार लाठी से वार किया गया था। उन्होंने यह भी कहा है कि सभी आरोपी व्यक्ति बार-बार शिव नाथ साह पर लाठी से हमला कर रहे थे, हालांकि उन्होंने कहा है कि वह यह नहीं कह सकते कि शिव नाथ साह पर कितने लाठी प्रहार किए गए थे। उन्होंने यह भी कहा है कि शिवनाथ साह पर पांच मिनट तक लाठियां बरसाई गईं, हालांकि उन्होंने कहा है कि वह यह नहीं बता सकते कि शिवनाथ साह के शरीर के किस हिस्से पर किसकी लाठी लगी। इसके बाद उन्होंने कहा कि लाठी से मारे जाने के बाद शिव नाथ साह बेहोश हो गए थे। उसने यह भी कहा है कि उसके कपड़ों पर खून नहीं था। इसके बाद हरद्याल, महेंद्र, विनोद, मनोज, देवीलाल, रामएकबाल और संतोष ने शिव नाथ को उठाया और उन्हें डंकन अस्पताल ले गए जहां डॉक्टर ने घावों पर पट्टी बांध दी थी। उन्होंने यह भी कहा है कि वे टाटा सुमो से अस्पताल गए थे और बैजनाथ (पीडब्लू 1), श्रवण (पीडब्लू 6), मनोज और देवलाल भी अस्पताल गए थे। अ. सा. - 5 रक्सौल यानी डंकन अस्पताल भी गए थे, जहाँ पुलिस ने बयान दर्ज नहीं किया था और उसी दिन शिव नाथ को पीएमसीएच, पटना भेजा गया था। उन्होंने यह भी कहा है कि मेघनाथ हरपुर के निवासी हैं।

14. अ. सा. - 6 श्रवण साह ने अपने बयान में कहा है कि यह घटना लगभग दो साल और पांच महीने पूर्व की है, सुबह करीब साढ़े छह बजे जब वह शौच करके घर लौट रहा था और जब वह राम दर्शन साह (पीडब्लू 2) के घर के पास पहुंचा तो आरोपी व्यक्तियों ने उसके बड़े भाई शिव नाथ साह को पकड़ लिया था और राधे साह ने उसे मारने का आदेश दिया था, जिस पर लक्ष्मण

साह (अपीलकर्ता सं. 1) ने शिव नाथ के सिर पर वार किया और उसके बाद महंथ साह (अपीलकर्ता सं. 5), अजय साह (अपीलकर्ता सं. 4), विजय साह (अपीलकर्ता सं. 3), राम सेवक साह, रामएकबाल साह (अपीलकर्ता सं. 6), ओम प्रकाश साह समेत कुल 17 अभियुक्तों ने शिव नाथ पर हमला किया, जिस पर उसका भाई शिव नाथ गिर गया और फिर उसे डंकन अस्पताल ले जाया गया, जहां से उसे पीएमसीएच, पटना रेफर कर दिया गया और वहां छह दिनों के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उन्होंने कहा है कि पक्षों के बच्चों के बीच विवाद होने के कारण, वर्तमान घटना हुई है। इसके बाद उन्होंने कहा कि जांच रिपोर्ट पुलिस द्वारा तैयार की गई थी, जिस पर उनके हस्ताक्षर हैं और इसे आपत्ति के साथ प्रदर्श-2 के रूप में चिह्नित किया गया है। अ. सा. - 6 ने यह भी कहा है कि सुरेश प्रसाद (सुचक) उसका भाई है और मृतक शिव नाथ साह उसका बड़ा भाई था। अ. सा. - 6 ने यह भी कहा है कि वह यह नहीं कह सकते कि कितने लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। अ. सा.- 6 ने यह भी कहा है कि जिस समय सुरेश प्रसाद ने मामला दर्ज कराया था, उस समय वह बाहर था और शाम को लगभग 4:00 बजे वह अपने घर आया था, जिसके बाद उसने घटना के बारे में पूछताछ की थी और फिर वह रक्सौल गया था जहां शिव नाथ भर्ती था, हालांकि उसने शिव नाथ से बात नहीं की थी। अ. सा. - 6 ने आगे कहा कि सूचना देने वाला मृतक का भाई है और छह दिन बाद उसने पटना में भी मामला दर्ज कराया था। उसने यह भी कहा है कि वह मृतक के साथ रक्सौल नहीं गया था। उन्होंने कहा है कि शिव नाथ साह को सुरेश प्रसाद (पीडब्लू 5), बैजनाथ और 2-4 अन्य लोग घायल हालत में रक्सौल ले गए थे। उन्होंने कहा है कि वह रक्सौल अस्पताल में शिव नाथ साह से मिलने गए थे और जब उन्हें पटना रेफर किया गया तो वे पटना भी गए थे। उन्होंने यह भी कहा है कि उनका बयान सुबह 10:00 बजे दर्ज किया गया था और उन्होंने पुलिस के समक्ष दिए गए अपने बयान में कहा था कि सरस्वती पूजा के कारण बच्चों के बीच झगड़ा हुआ था, जिसके कारण यह घटना घटी। उन्होंने यह भी कहा है कि वह मृतक की मृत्यु तक उनके साथ थे और उनके पूरे शरीर पर चोट के निशान थे। अ. सा. - 6 ने आगे कहा है कि मृतक का पोस्टमार्टम पटना में किया गया था। उन्होंने यह भी कहा है कि देवीलाल का बेटा इस मामले का एक गवाह है।

15. अ. सा. - 7 गणेश राम वर्तमान मामले के जांच अधिकारी हैं और उन्होंने अपने बयान में कहा है कि उन्हें हरपुर पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी के रूप में तैनात किया गया था और उस दिन 9:00 बजे शाम को उन्हें सुरेश प्रसाद नामक सुचक की लिखित रिपोर्ट मिली थी, जिसके बाद उन्होंने औपचारिक प्राथमिकी दर्ज करने के लिए उसे अदापुर पुलिस स्टेशन को भेज दिया था और उक्त मामले की जांच भी शुरू कर दी थी। अ. सा. - 7 ने औपचारिक एफ. आई. आर. को साबित कर दिया है और प्रभारी अधिकारी के हस्ताक्षर की भी पहचान कर ली है, जिसे प्रदर्श-3 के रूप में अंकित किया गया है। अ. सा.- 7 ने यह भी कहा है कि जांच संभालने के बाद उसने पुनः बयान दर्ज किया था और 23:15 बजे वह घटनास्थल पर पहुंचा था, जिसके बाद उसने गवाह राम दर्शन साह (अ. सा.- 2) का बयान दर्ज किया था। 25.1.2007 को वह फिर से सुबह 9:20 बजे हरपुर गांव गया था और गवाहों का बयान दर्ज किया था। अ. सा.- 7 ने कहा है कि उन्होंने गवाहों बैजनाथ प्रसाद (अ. सा.-2), राम एकबाल साह, संतोष साह, रामजी साह और विनोद साह का बयान भी दर्ज किया था। फिर 26.01.2007 को, वे शिव नाथ साह के घर गए और गवाह किसनावती देवी (अ. सा.-4), बबन प्रसाद, हीरा लाल साह और हरदयाल साह का बयान दर्ज किया। 31.01.2007 पर, जाँच के दौरान, उन्हें पता चला कि शिव नाथ साह का इलाज पीएमसीएच में किया जा रहा था और 30.01.2007 पर इलाज के दौरान उनकी मृत्यु हो गई थी। 5.02.2007 पर, उन्होंने भा.द.सं. की धारा 307 जोड़ने के लिए एक आवेदन दायर किया था। 12.02.2007 पर, उन्हें मृतक की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट मिली थी और 13.02.2007 पर, मृतक के भाई श्रवण साह के फर्दबयान को पीरबहोर पुलिस स्टेशन, पटना के पुलिस अधिकारियों द्वारा पी.एम.सी.एच. में दर्ज किया गया था, जो उन्हें प्राप्त हुआ था। 22.02.2007 को उन्होंने श्रवण साह (अ. सा.- 6) और महेन्द्र साह (अ. सा.- 3) का बयान दर्ज किया था। अ. सा.- 7 ने आगे कहा कि उन्होंने 01.07.2007 को भा.द.सं. की धारा 147,148,149,341,323,325 और 302 के तहत आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था। प्रतिपरीक्षण में अ. सा.- 7 ने कहा है कि घटना की तिथि को 23:15 बजे उसने राम दर्शन साह (अ. सा.-2) को देखा था, हालांकि उसने कहा है कि उसे नहीं मालूम कि उसका इलाज हुआ या नहीं, फिर भी उसने अपना बयान दर्ज कराया है। अ. सा.- 7 ने

यह भी कहा है कि लिखित रिपोर्ट में 9 आरोपियों के नाम लिखे गए हैं। प्रतिपरीक्षण के पैरा 5 में अ. सा.- 7 ने कहा है कि केस डायरी के पैरा 1 के अनुसार 24.01.2007 को रात्रि 9:00 बजे लिखित रिपोर्ट पेश की गई और 25.01.2007 को दोपहर 12:30 बजे प्राथमिकी दर्ज की गई। अ. सा. - 7 ने यह भी कहा है कि जांच के दौरान वह शिव नाथ से नहीं मिले थे। अपने प्रतिपरीक्षण के पैराग्राफ सं. 8 में अ. सा.- 7 ने कहा है कि अपने पुनर्कथन में सुचक ने कहा है कि लक्ष्मण (अपीलकर्ता सं. 1) ने मृतक के सिर पर 2-3 बार लाठियों से प्रहार किया था और उसने यह भी कहा है कि उसके गिर जाने के बाद अन्य अभियुक्तों महंथ (अपीलकर्ता सं. 5), रामएकबाल (अपीलकर्ता सं. 6), इनार साह (अपीलकर्ता सं. 2), विजय साह (अपीलकर्ता सं. 3) और अन्य ने भी मृतक पर लाठियों से हमला किया था। उन्होंने यह भी कहा कि जांच के दौरान उन्हें डंकन अस्पताल से कोई चोट की रिपोर्ट नहीं मिली थी। इसके बाद उन्होंने आगे कहा है कि केस डायरी के पैरा सं. 6 में उन्होंने राम दर्शन साह (अ. सा.- 2) का बयान दर्ज किया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि मृतक पर लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1), अवधेश साह, महंथ साह (अपीलकर्ता सं. 5), विजय साह (अपीलकर्ता सं. 3), अजय साह (अपीलकर्ता सं. 4), रामएकबाल साह (अपीलकर्ता सं. 6), संजय साह, इनार साह (अपीलकर्ता सं. 2) और राम सेवक साह द्वारा हमला किया जा रहा था, जिन्होंने मृतक को घेर लिया था। अ. सा. - 7 ने यह भी कहा है कि केस डायरी में उन्होंने राम दर्शन साह को लगी चोट का उल्लेख नहीं किया है, हालांकि, मृतक के गिरने के बाद, महांत साह (अपीलकर्ता सं. 5), विजय साह (अपीलकर्ता सं. 3), अजय (अपीलकर्ता सं. 4), इनार (अपीलकर्ता सं. 2) और अन्य लोगों ने मृतक पर हमला किया था। अ. सा. - 7 ने कहा है कि पैराग्राफ सं. 20 में यह दर्ज किया गया है कि रामजी साह ने कहा था कि जब वह घटना स्थल पर पहुंचे तो सभी आरोपी भाग गए थे। पैराग्राफ सं. 30 में, किसनावती देवी का बयान दर्ज किया गया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि जब उन्होंने शोर मचाया था, तो अन्य गवाह आ गए थे और जब राम दर्शन साह मृतक को बचाने आए थे, तो अवधेश ने उनके हाथ पर लाठी चलाई थी, जिसके परिणामस्वरूप उनका हाथ टूट गया था। उसने बताया कि उसके शोर मचाने पर संतोष, मनोज

आदि गांव के अन्य लोग वहां पहुंचे थे। अ. सा.-7 ने केस डायरी के पैराग्राफ सं. 124 का हवाला देते हुए बताया है कि जवाबी मामला भी दर्ज किया गया है।

16. अ. सा.- 8 डॉ. अरुण कुमार सिंह पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के फॉरेंसिक विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। अ. सा.- 8 ने अपने बयान में कहा है कि 31.01.2007 को वे पटना मेडिकल कॉलेज में ट्यूटर के पद पर तैनात थे और उसी दिन उन्होंने शिवनाथ साह के शव का पोस्टमार्टम किया था, जो दोपहर 1:00 बजे शुरू हुआ था। अ. सा.-8 के निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

“बाहरी रूप

औसत शारीरिक बनावट, शव काठिन्य पूरे तौर पर मौजूद । फोली कैथेटर मौजूद है। दाहिनी आँख काली पड़ गई है।

शव परीक्षण के बाद, मृतक के शव पर मृत्यु पूर्व बाहरी और आंतरिक निम्नलिखित चोटें पाई गईं:

सं. 1- नाक के सामने 1 1/2" x 1/2" का एक ठीक हुआ खरोंच। विच्छेदन पर, सिर पर दोनों ललाट, दोनों पार्श्विका और दोनों टेम्पोरल क्षेत्रों में खोपड़ी के नीचे हेमेटोमा था। बाएं ललाट, बाएं टेम्पोरल, बाएं पार्श्विका, दाएं पार्श्विका और दाएं टेम्पोरल हड्डियों का विखंडित फ्रैक्चर था। कैलोमेल सिवनी का भी पृथक्करण था। मस्तिष्क के बाएं ललाट, बाएं टेम्पोरल, बाएं पार्श्विका क्षेत्र पर 4 1/2" x 3 1/2" का एक्स्ट्राड्यूरल हेमेटोमा था। मस्तिष्क में रक्त का जमाव था। हृदय में दाईं ओर थोड़ा खून था, बाईं ओर खाली था। पेट में लगभग 100 मिली लीटर हरा तरल पदार्थ था। अन्य सभी विसरा में रक्त का जमाव पाया गया। मूत्राशय खली था।

राय

- (1) मृत्यु के बाद का समय पोस्टमॉर्टम परीक्षा के समय से 06 से 24 घंटे।
- (2) मृत्यु का कारण सिर में चोट।

(3) हिंसा की प्रकृति - कठोर और कुंद पदार्थ और इसका प्रभाव।”

अ. सा. - 8 ने आगे कहा है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट उनके द्वारा लिखी गई थी और उस पर उनके हस्ताक्षर हैं, जिसे उन्होंने पहचाना है और प्रदर्श -4 के रूप में चिह्नित किया गया है। प्रतिपरीक्षण में, अ. सा. - 8 ने कहा है कि उन्होंने मृतक के शरीर की नाक के बाहरी हिस्से में एक ठीक हुआ खरोंच पाया था, हालांकि उन्हें मृतक के शरीर पर कोई अन्य बाहरी चोट नहीं मिली थी। उन्होंने यह भी कहा है कि अगर सिर पर लाठी से हमला किया जाता है, तो बाहरी चोट नहीं लगेगी, हालांकि यह भी हो सकती है। अपनी प्रतिपरीक्षण के पैराग्राफ सं. 7 में, अ. सा.- 8 ने कहा है कि सिर पर बहुत सारे बाल होने या सिर पर कपड़े (पगड़ी) होने की स्थिति में, बाहरी चोट नहीं देखी जाती है। उन्होंने यह भी कहा है कि हेमेटोमा को ठीक करने में एक महीने का समय लगता है। उन्होंने यह भी कहा है कि कठोर पदार्थ पर गिरने या किसी कठोर पदार्थ से टकराने से भी हेमेटोमा बन सकता है। अ. सा.- 8 ने आगे कहा है कि उसे मृतक के सिर पर कोई बाहरी चोट नहीं मिली है और उसने अपनी पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में यह नहीं बताया है कि किस प्रकार के हथियार का इस्तेमाल किया गया था।

17. अ. सा.- 9 डॉ. एस. के. पासवान वह डॉक्टर हैं, जिन्होंने घायल गवाह राम दर्शन साह (अ. सा.-2) की जांच की थी। अ. सा.- 9 ने अपने बयान में कहा है कि 25.01.2007 को वह प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, आदापुर में तैनात थे और उस दिन दोपहर करीब 1:45 बजे उन्होंने राम दर्शन साह की जांच की और उन्हें निम्नलिखित चोटें मिलीं:

“(1) निचले अल्ना के निचले छोर के पास 3 "x 2" सूजन। एक्स-रे ए. पी. और पार्श्व दृश्य अल्ना हड्डी के निचले छोर के प्रमाण दिखाता है।

(2) चोटों की आयु - 24 घंटे के भीतर।

(3) चोटों की प्रकृति-गंभीर प्रकृति, कठोर और कुंद पदार्थ।”

अ. सा. - 9 ने चोट की रिपोर्ट की पहचान की है, जिसे उन्होंने अपने लेखन में बताया है और साथ ही उन्होंने उस पर किए गए अपने हस्ताक्षर की पहचान की है और उसे प्रदर्श सं. 5 के रूप में चिह्नित किया गया है। प्रतिपरीक्षण में, अ. सा. - 9 ने कहा है कि चोट की रिपोर्ट पर न तो अंगूठे का निशान है और न ही घायल के हस्ताक्षर हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि अगर कोई व्यक्ति अपने हाथ पर गिर जाता है, तो भी इस तरह की चोट लग सकती है। अ. सा. - 9 ने आगे कहा है कि उनकी चोट की रिपोर्ट में एक्स-रे प्लेट का संदर्भ नहीं दिया गया है क्योंकि तकनीशियन अपनी रिपोर्ट नहीं देता है और इस समय एक्स-रे उनके सामने मौजूद नहीं है।

18. अभियोजन पक्ष के साक्ष्य को बंद करने के बाद, विद्वत ट्रायल कोर्ट ने अपीलार्थियों का बयान 24.07.2015 पर दं. प्र. सं. की धारा 313 के तहत दर्ज किया, ताकि वे व्यक्तिगत रूप से अपने खिलाफ साक्ष्य में दिखाई देने वाली परिस्थितियों को समझा सकें, हालांकि उन्होंने खुद को निर्दोष होने का दावा किया, फिर भी एक सवाल के जवाब में कि उन्हें अपने बचाव में क्या कहना है, उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें कुछ नहीं कहना है।

19. विचारण न्यायालय ने विचारण में प्रस्तुत साक्ष्यों की समीक्षा, विश्लेषण एवं जांच के पश्चात उपरोक्त अपीलकर्ताओं को अपराध का दोषी पाया है तथा अपने विवादित निर्णय एवं आदेश द्वारा उन्हें कारावास एवं जुर्माने की सजा सुनाई है, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है।

20. अभियोजन पक्ष के साक्ष्य के अवलोकन से पता चलता है कि दिनांक 24.1.2007 को प्रातः 6:30 बजे सुरेश प्रसाद (सूचनाकर्ता) का बड़ा भाई शिव नाथ प्रसाद (मृतक) शौच करके आ रहा था और जब वह राम दर्शन साह (अ. सा.- 2) के घर के दरवाजे पर पहुंचा तो अपीलकर्तागण तथा अन्य अभियुक्तगण, जो पहले से वहां बैठे थे, ने उसे घर लिया, जिसके बाद लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1) ने मृतक शिव नाथ प्रसाद के माथे पर लाठी से प्रहार किया, जिससे वह घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा, जिसके बाद अपीलकर्तागण सं. 2 से 6 तथा अन्य ने मृतक शिव नाथ प्रसाद पर लाठी और फट्टा से हमला किया, जिससे मृतक शिव नाथ प्रसाद बेहोश हो गया और फिर राम दर्शन साह (अ. सा.- 2) ने मृतक को बचाने के लिए हस्तक्षेप किया, हालांकि अभियुक्त

व्यक्ति अवधेश साह ने उसके दाहिने हाथ पर लाठी से वार किया, जिससे उसका दाहिना हाथ टूट गया था। वास्तव में, परिवार के अन्य सदस्य और सह-ग्रामीण भी घटना स्थल पर पहुंचे थे और घटना को देख रहे थे। मृतक शिव नाथ प्रसाद को रक्सौल के डंकन अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उन्हें पीएमसीएच, पटना रेफर कर दिया गया, जहां घटना के 5-6 दिनों के बाद इलाज के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। इस मोड़ पर यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि अ. सा.- 1 बैजनाथ प्रसाद, अ. सा.- 2 राम दर्शन साह, अ. सा.- 3 महेंद्र साह, अ. सा.- 4 किशनवती देवी, अ. सा.- 5 सुरेश प्रसाद और अ. सा.- 6 श्रवण साह उपरोक्त घटना के चश्मदीद गवाह हैं और उन्होंने इसमें अपीलकर्ताओं और अन्य लोगों द्वारा किए गए प्रस्ताव के संबंध में लगातार गवाही दी है, जो प्रतिपरीक्षण की कसौटी पर भी खरा उतरा है। यह एक अच्छी तरह से स्थापित कानून है कि अभियोजन पक्ष के साक्ष्य में मामूली विसंगतियां, यदि कोई हैं, प्रकृति में महत्वहीन होने के कारण, अपीलकर्ताओं के अपराध को स्थापित करने के लिए मुकदमे में पेश किए गए भारी मात्रा में दोषपूर्ण साक्ष्यों के मामले में अभियोजन पक्ष के मामले पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकती हैं।

21. प्राथमिकी में अभियोजन पक्ष की कहानी मुकदमे में पेश किए गए प्रत्यक्ष साक्ष्यों से पूरी तरह से समर्थित है और प्रत्यक्ष साक्ष्य की पुष्टि मेडिकल साक्ष्य से भी होती है, क्योंकि डॉक्टर ने अपने साक्ष्य में स्पष्ट रूप से कहा है कि मौत का कारण कठोर और कुंद पदार्थ से सिर पर लगी चोट है।

22. वास्तव में, अपीलकर्ता गवाहों के बयान में कोई भी महत्वपूर्ण विरोधाभास नहीं दिखा पाए हैं, क्योंकि धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत गवाहों द्वारा दिए गए बयानों को अ. सा.- 7 गणेश राम (जांच अधिकारी) के समक्ष उनकी प्रतिक्रिया जानने के लिए रखा गया था, हालांकि अ. सा.- 7 के साक्ष्य का एक मात्र अवलोकन यह दर्शाता है कि जहां तक अ. सा.- 1 का संबंध है, कोई विरोधाभास नहीं निकाला जा सकता है, क्योंकि अ. सा.- 7 ने अपने साक्ष्य में कहा है कि अ. सा.- 1 ने उसे बताया था कि लक्ष्मण साह (अपीलकर्ता सं. 1) ने मृतक के सिर पर 2-3 लाठियां मारी थीं और जब वह गिर गया, तो अन्य लोगों ने भी उस पर लाठी और फट्टा से हमला किया था।

जहां तक अ. सा.- 2 का सवाल है, अ. सा.-7 ने अपने साक्ष्य में कहा है कि उसने अपने सामने कहा था कि मृतक पर अपीलकर्ताओं ने हमला किया था। अ. सा.- 4 (किसनवती देवी) के संबंध में, अ. सा.-7 ने अपने साक्ष्य में कहा है कि जब उसने शोर मचाया तो अन्य गवाह आ गए थे। हालाँकि, जहाँ तक अ. सा.- 3, अ. सा.- 5 और अ. सा.- 6 का सवाल है, धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत दिए गए उनके बयान को अ. सा.- 7 (जांच अधिकारी) के समक्ष उनकी प्रतिक्रिया जानने के लिए नहीं रखा गया। इस प्रकार, अभियोजन पक्ष के गवाहों के प्रत्यक्ष साक्ष्य पर विचार करते हुए, जो प्रतिपरीक्षण की कसौटी पर खरे उतरे हैं, हमारी राय में, उनके साक्ष्य में मामूली विसंगतियाँ अभियोजन पक्ष के मामले को प्रभावित नहीं कर सकती हैं, इसलिए अभियोजन पक्ष के गवाह अविश्वसनीय नहीं प्रतीत होते हैं।

23. अब अपीलार्थियों के लिए विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा की गई प्रस्तुतियों पर आते हुए, हम पाते हैं कि उन्होंने जोरदार तर्क दिया है कि सुचक द्वारा प्रस्तुत की गई 24.1.2007 की लिखित रिपोर्ट, जिसके कारण 25.1.2007 पर प्राथमिकी दर्ज की गई, सबसे पहला संस्करण नहीं है, क्योंकि सबसे पहले, यह उनके लेखन में नहीं है और दूसरा, उक्त लिखित रिपोर्ट के लेखक, अर्थात् मेघनाथ प्रसाद की अभियोजन पक्ष द्वारा जांच नहीं की गई है, इस तथ्य के अलावा कि दिनांक 24.1.2007 की लिखित रिपोर्ट में इस आशय का कोई वर्णन भी नहीं है कि एफ.आई.आर. सुचक को पढ़कर सुनाई गई थी, जिसने इसे समझ लिया था और फिर इसे सही पाकर अपने हस्ताक्षर किए थे। हम पाते हैं कि कमी पैदा करने के लिए अनावश्यक प्रयास किए गए हैं, लेकिन तथ्य यह है कि सुचक , अर्थात् सुरेश प्रसाद (अ. सा.- 5) ने अपने साक्ष्य में कहा है कि लिखित रिपोर्ट यद्यपि मेघनाथ प्रसाद द्वारा लिखी गई थी, लेकिन उसे उसे पढ़कर सुनाया गया और फिर उसे समझने के बाद, उसने उस पर अपने हस्ताक्षर किए, जिसे विधिवत पहचान की गई है और प्रदर्श-1 के रूप में चिह्नित किया गया है। इस मामले का एक अन्य पहलू यह है कि गवाह के सामने कोई सवाल नहीं रखा गया है, विशेष रूप से सुचक यानी अ. सा. - 5 को लिखित रिपोर्ट की असत्यता के बारे में प्रतिपरीक्षण में और यह कि यह मनगढ़ंत है, इसलिए गवाह के साक्ष्य के अप्रतिरोध्य हिस्से पर भरोसा किया जाना चाहिए। यह एक सुव्यवस्थित कानून है कि किसी विशेष तथ्य और परिस्थिति

की प्रतिपरीक्षण में गवाह से सवाल किए जाने के अभाव में, ऐसे गवाह के साक्ष्य के अप्रतिरोध्य भाग पर भरोसा किया जाना चाहिए। इस संबंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ज्ञान चंद एवं अन्य बनाम हरियाणा राज्य के मामले में दिए गए निर्णय का संदर्भ लिया जाना चाहिए, जो (2013) 14 एससीसी 420 में रिपोर्ट किया गया था, साथ ही माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा लक्ष्मीबाई बनाम भगवंत बुवा के मामले में दिए गए निर्णय का भी संदर्भ लिया जाना चाहिए, जो (2013) 4 एससीसी 97 में रिपोर्ट किया गया था, जिसका पैराग्राफ सं. 40 नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

“40. इसके अलावा, तय किए गए कानूनी प्रस्ताव के संबंध में कोई विवाद नहीं हो सकता है, कि यदि कोई पक्ष किसी गवाह के बयान की शुद्धता के संबंध में कोई संदेह उठाना चाहता है, तो उक्त गवाह को उसके उस हिस्से की ओर अपना ध्यान आकर्षित करके अपने बयान को समझाने का अवसर दिया जाना चाहिए, जिस पर दूसरे पक्ष ने असत्य होने के कारण आपत्ति जताई है। इसके बिना उनकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाना संभव नहीं है। ऐसा कानून साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 138 में निहित वैधानिक प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ाया गया है, जो विरोधी पक्ष को अपने प्रारंभिक परीक्षण के दौरान साक्ष्य में दी गई जानकारी के संबंध में एक गवाह से प्रतिपरीक्षण करने में सक्षम बनाता है, और इस प्रावधान का दायरा साक्ष्य अधिनियम की धारा 146 द्वारा बढ़ाया गया है, जो एक गवाह को उसकी सत्यता का परीक्षण करने के लिए पूछताछ करने की अनुमति देता है। इसके बाद, उसके साक्ष्य के अप्रतिरोध्य भाग पर भरोसा किया जाना चाहिए, क्योंकि गवाह के लिए उस संबंध में किसी भी संदेह को समझाना या विस्तार से बताना असंभव है, उन परिस्थितियों के संबंध में उसके सामने रखे गए प्रश्नों के अभाव में जो इंगित करते हैं कि उसके द्वारा प्रदान की गई घटनाओं का संस्करण विश्वास करने योग्य नहीं है, और गवाह स्वयं श्रेय के योग्य नहीं है। इस प्रकार, यदि कोई पक्ष किसी गवाह पर महाभियोग चलाने का इरादा रखता है, तो

उसे गवाह को एक पूर्ण और उचित स्पष्टीकरण देने के लिए गवाह बॉक्स में पर्याप्त अवसर प्रदान करना चाहिए। यह गवाहों के साथ न्यायसंगत व्यवहार और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।”

24. हम यह भी पाते हैं कि जहां तक 24.1.2007 की लिखित रिपोर्ट के आधार पर प्राथमिकी दर्ज करने का सवाल है, इसमें कोई कमी नहीं है, क्योंकि पुलिस को 24.1.2007 को रात 9:00 बजे लिखित रिपोर्ट मिलने के बाद उसे हरपुर (आदापुर) पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी को भेज दिया गया था, जिसके बाद 25.1.2007 को 12:30 बजे तुरंत प्राथमिकी दर्ज की गई और फिर उसे 27.1.2007 को अदालत में भेज दिया गया। इस प्रकार, हम पाते हैं कि अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा पेश किया गया तर्क कि प्रश्नगत घटना का सबसे पुराना संस्करण रोक दिया गया है, विचारणीय नहीं है।

25. अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील ने अभियोजन पक्ष के गवाहों की विश्वसनीयता पर प्रश्न उठाने का प्रयास किया और प्रस्तुत किया है कि वे वास्तव में चश्मदीद गवाह नहीं हैं, क्योंकि वे घटना के बहुत बाद घटना स्थल पर पहुंचे थे। यह प्रस्तुत किया गया है कि जहां तक अ. सा. - 4 किसनावती देवी का संबंध है, उन्होंने अपने साक्ष्य में कहा है कि उनके द्वारा शोर मचाने के बाद, महेंद्र साह (पीडब्लू 3), संतोष, बिनोद और सुरेश (पीडब्लू 5) वहां पहुंचे थे। यह भी प्रस्तुत किया गया है कि अ. सा. - 4 ने अपने साक्ष्य में कहा है कि जब वह घटना स्थल पर पहुंची थी, तो उसका पति बेहोश हो गया था, जिसका अर्थ है कि जब उसके पति पर हमला किया जा रहा था, उस समय वह भी मौजूद नहीं थी। जहां तक अ. सा. - 6 श्रवण साह का संबंध है, यह प्रस्तुत किया गया है कि उन्होंने अपने साक्ष्य में कहा है कि जब सुरेश साह ने मामला दर्ज कराया था तो वह बाहर थे और शाम को घर लौटे थे, इसलिए अ. सा. - 6 भी चश्मदीद गवाह नहीं हैं। यह भी प्रस्तुत किया गया है कि अधिकांश गवाहों की जांच पुलिस द्वारा घटना के काफी समय बीत जाने के बाद की गई है और इसके अलावा, अभियोजन पक्ष की कहानी चिकित्सा साक्ष्य से मेल नहीं खाती है। यह भी प्रस्तुत किया जाता है कि घटना का उद्देश्य साबित नहीं हुआ है, इस प्रकार संक्षेप

में, अपीलार्थियों का मामला यह है कि अभियोजन पक्ष के गवाह के साक्ष्य से पता चलेगा कि उनमें से कोई भी चश्मदीद गवाह नहीं है, इसलिए उनके साक्ष्य को विश्वसनीय या भरोसेमंद नहीं कहा जा सकता है, इसलिए अपीलार्थियों की दोषसिद्धि को रद्द किए जाने योग्य है। हम अभियोजन पक्ष के साक्ष्यों के अवलोकन से पाते हैं कि अभियोजन पक्ष के गवाहों ने अपीलार्थियों और अन्य लोगों द्वारा किए गए प्रस्ताव के संबंध में लगातार गवाही दी है, जो प्रतिपरीक्षण की कसौटी पर भी खरा उतरा है, इसलिए उनके साक्ष्य में मामूली विसंगतियां अभियोजन पक्ष के मामले को प्रभावित नहीं कर सकती हैं, विशेष रूप से क्योंकि हम पहले ही इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं कि अभियोजन पक्ष के गवाह अविश्वसनीय नहीं प्रतीत होते हैं। जहाँ तक अ. सा.- 4 का संबंध है, उसने अपने साक्ष्य में कहा है कि जब उसका पति सामने जा रहा था तो वह उसका पीछा कर रही थी और उसने अपीलकर्ताओं को अपने मृत पति पर हमला करते देखा था, जो प्रतिपरीक्षण की कसौटी पर भी खरा उतरा है, इस प्रकार मामूली विरोधाभास अभियोजन पक्ष के मामले को प्रभावित नहीं करेगा। जहां तक पीडब्लू 5 यानी सुचक सुरेश प्रसाद का संबंध है, उसने भी अपने साक्ष्य में कहा है कि उसने घटना देखी थी और अपीलकर्ताओं को मृतक शिव नाथ पर हमला करते देखा था, जो प्रतिपरीक्षण की कसौटी पर भी खरा उतरा है। जहां तक अ. सा.- 6 श्रवण साह का सवाल है, हम पाते हैं कि उसने अपने साक्ष्य में लगातार यह कहा है कि जब वह शौच करके वापस आ रहा था और अ. सा.- 2 के घर पहुंचा था, तो अपीलकर्ताओं और अन्य ने मृतक शिव नाथ को पकड़ लिया था और फिर अपीलकर्ता सं. 1 ने मृतक के सिर पर मारा था, जिसके बाद अन्य आरोपियों ने मृतक पर हमला किया था, हालांकि अपीलकर्ता उसके द्वारा अपने साक्ष्य में दिए गए इस कथन का फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं कि जब सुरेश ने मामला दर्ज कराया था, तब वह बाहर था, लेकिन हम पाते हैं कि घटना 24.1.2007 की सुबह 6:30 बजे हुई थी, जिसके बाद उसी दिन रात 9:00 बजे लिखित रिपोर्ट दर्ज की गई थी, इसलिए अ. सा.- 6 के कथन में कोई विसंगति नहीं है। इस प्रकार, हम पाते हैं कि अपीलार्थी यह दिखाने में विफल रहे हैं कि पीडब्लू. 1, पीडब्लू. 2, पीडब्लू. 3, पीडब्लू. 4, पीडब्लू. 5 और पीडब्लू. 6 विचाराधीन घटना के चश्मदीद गवाह नहीं हैं। वास्तव में, अभियोजन पक्ष के सभी गवाहों ने लगातार गवाही दी है और उनके साक्ष्य में कोई

महत्वपूर्ण विरोधाभास नहीं है, इस तथ्य के अलावा कि उन्होंने अपने साक्ष्य में कथित घटना के चश्मदीद गवाह होने के लिए भी कहा है, इसलिए हम पाते हैं कि अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य विश्वसनीय और भरोसेमंद हैं और सुसंगत और ठोस हैं, इस प्रकार, अपीलार्थियों के अपराध को स्थापित करने के लिए उन पर भरोसा किया जाना उचित है। यह एक अच्छी तरह से स्थापित कानून है कि यदि प्रत्यक्ष साक्ष्य उपलब्ध है, तो उद्देश्य अधिक भूमिका नहीं निभाता है। यह एक सुस्थापित कानून है कि यदि प्रत्यक्ष साक्ष्य उपलब्ध है, तो मकसद ज्यादा भूमिका नहीं निभाता है। हम यह भी पाते हैं कि गवाहों ने लगातार यह गवाही दी है कि आरोपी अवधेश साह ने अ. सा.- 2 राम दर्शन साह के दाहिने हाथ पर हमला किया था, जिससे उसका दाहिना हाथ फ्रैक्चर हो गया। हम यह भी पाते हैं कि नेत्र संबंधी साक्ष्य चिकित्सा साक्ष्य द्वारा पूरी तरह से समर्थित है।

26. फिर भी मामले का एक अन्य पहलू, जिसे अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा विचार किया गया है, यह है कि हालांकि मृतक के शरीर पर एक बाहरी चोट है, लेकिन 12 अभियुक्त व्यक्तियों को दोषी ठहराया गया है और यहां तक कि अपीलार्थी सं. 1 भी बार-बार प्रहार में शामिल नहीं था, इसलिए उसका मृतक को मारने का कोई इरादा नहीं था, इस प्रकार वर्तमान मामला गैर-इरादतन हत्या के दायरे में आएगा, जो हत्या नहीं होगी। इस संबंध में हम अ. सा. - 8 डॉ. अरुण कुमार सिंह के साक्ष्य के माध्यम से पाते हैं, जिन्होंने मृतक शिव नाथ साह के शव का पोस्टमॉर्टम परीक्षण किया था कि हालांकि बाहरी रूप से एक ठीक खरोंच नाक के सामने पाया गया था, हालांकि विच्छेदन पर, खोपड़ी के नीचे दोनों सामने, दोनों पार्श्व और सिर पर दोनों टेम्पोरल क्षेत्र में हेमेटोमा था। बाएँ फ्रंटल, बाएँ टेम्पोरल, बाएँ पैरिटल, दाएँ पैरिटल और दाएँ टेम्पोरल हड्डियों का कमिन्स्यूटेड फ्रैक्चर था। बाएं फ्रंटल, बाएं टेम्पोरल और बाएं पैराइटल क्षेत्र में 4 ½" x 3 ½" का एक्स्ट्राड्यूरल हेमेटोमा पाया गया। मस्तिष्क संपृक्त था। इस प्रकार, विच्छेदन के दौरान कई गंभीर चोटें पाई गईं। वास्तव में, अ. सा. - 8 ने राय दी है कि मृत्यु का कारण कठोर और कुंद पदार्थ के कारण सिर में चोट लगना है। हम यह भी पाते हैं कि अभियोजन पक्ष के गवाहों ने लगातार बयान दिया है कि अपीलार्थी सं. 1 द्वारा 2-3 लाठी प्रहार किए गए थे, जिसके परिणामस्वरूप मृतक को चोटें आईं और वह जमीन पर गिर गया, जिसके बाद अन्य सभी

अपीलार्थी और अन्य अभियुक्त व्यक्तियों ने मृतक पर लाठी और फट्टा से हमला किया था। इस प्रकार, हम पाते हैं कि अपीलकर्ता सं. 1 द्वारा मृतक के माथे पर बार-बार लाठी से हमला करने के परिणामस्वरूप सिर/खोपड़ी पर कई स्थानों पर हेमेटोमा और फ्रैक्चर हो गया, जैसा कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से स्पष्ट है, मृतक शिव नाथ प्रसाद की मृत्यु हो गई, इसलिए मृतक पर न केवल अपीलकर्ता सं. 1 द्वारा बल्कि अपीलकर्ता सं. 2 से 6 सहित अन्य लोगों द्वारा भी बेरहमी से हमला किया गया था। फिर भी, हम पाते हैं कि यह एक स्थापित कानून है कि ऐसे मामलों में जहां बड़ी संख्या में आरोपी व्यक्तियों द्वारा गैरकानूनी सभा का गठन करके एक या अधिक व्यक्तियों पर हमला करने और उनकी हत्या करने का आरोप लगाया जाता है, यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक आरोपी घातक चोट या कोई भी चोट पहुंचाए और धारा 149 को लागू करके, गैरकानूनी सभा के सदस्यों को प्रतिनिधि दायित्व के आधार पर दंडित किया जा सकता है, भले ही उन पर घातक चोट पहुंचाने का आरोप न हो। इस संबंध में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा *नित्या नंद बनाम उत्तर प्रदेश राज्य और अन्य* के मामले में दिए गए निर्णय का संदर्भ लिया जाना चाहिए, (2024) 9 एससीसी 314 में रिपोर्ट की गई, पैराग्राफ सं. 41 से 48 यहाँ नीचे पुनः प्रस्तुत किए गए हैं: -

“41. भा.द.सं. की धारा 141 "गैरकानूनी सभा" को परिभाषित करती है। यह कहता है कि पाँच या अधिक व्यक्तियों की सभा को गैरकानूनी सभा के रूप में नामित किया जाता है यदि उस सभा की रचना करने वाले व्यक्तियों का सामान्य उद्देश्य आपराधिक बल के माध्यम से एक अवैध कार्य करना है।

42. भा.द.सं. की धारा 148 के अनुसार, जो घातक हथियार से लैस दंगों से संबंधित है, जो कोई भी दंगा करने, घातक हथियार से लैस होने या किसी भी ऐसी चीज के साथ, जिसका उपयोग अपराध के हथियार के रूप में किया जाता है, मौत का कारण बनने की संभावना है, उसे किसी भी प्रकार के कारावास से दंडित किया जाएगा, जो तीन साल तक की अवधि के लिए हो सकता है, या जुर्माना, या दोनों से दंडित किया जाएगा। "दंगा" को धारा 146

भा.द.सं. में परिभाषित किया गया है। उक्त परिभाषा के अनुसार, जब भी किसी गैरकानूनी सभा द्वारा या उसके किसी सदस्य द्वारा ऐसी सभा के सामान्य उद्देश्य के अभियोजन में बल या हिंसा का उपयोग किया जाता है, तो ऐसी सभा का प्रत्येक सदस्य दंगे के अपराध का दोषी होता है।

43. यह हमें महत्वपूर्ण खंड पर लाता है जो धारा 149 भा.द.सं. है। भा.द.सं. की धारा 149 में कहा गया है कि गैरकानूनी सभा का प्रत्येक सदस्य सामान्य उद्देश्य के अभियोजन में किए गए अपराध का दोषी होगा। भा.द.सं. की धारा 149 काफी स्पष्ट है। इसमें कहा गया है कि यदि किसी गैरकानूनी सभा के किसी सदस्य द्वारा उस जमावड़े के सामान्य उद्देश्य के लिए कोई अपराध किया जाता है, या ऐसा अपराध जिसके बारे में उस सभा के सदस्यों को पता था कि उस उद्देश्य के लिए ऐसा किया जा सकता है, तो प्रत्येक व्यक्ति जो उस अपराध को करने के समय उक्त जमावड़े का सदस्य है, उस अपराध का दोषी है। इस प्रकार, यदि यह धारा 302 भा.द.सं. के तहत हत्या का मामला है, तो गैरकानूनी सभा का प्रत्येक सदस्य धारा 302 भा.द.सं. के तहत अपराध करने का दोषी होगा।

44. कृष्णप्पा बनाम कर्नाटक राज्य (2012) 11 एस. सी. सी. 237:(2013) 1 एस. सी. सी. (सी. आर. आई.) 621], इस न्यायालय ने भा.द.सं. की धारा 149 की जांच करते हुए निम्नलिखित निर्णय दिया (एस. सी. सी. पी.243, पैरा 20-21)

“20. अब यह सुस्थापित कानून है कि जब भी किसी गैरकानूनी सभा के किसी सदस्य द्वारा उस सभा के सामान्य उद्देश्य के लिए कोई अपराध किया जाता है, या जब उस सभा के सदस्यों को पता होता है कि उस उद्देश्य के लिए अपराध किया जा सकता है, तो धारा 149 भा.द.सं. के प्रावधान लागू होंगे, ताकि प्रत्येक व्यक्ति, जो उस अपराध को करने के

समय उसका सदस्य है, उस अपराध के लिए उत्तरदायी और दोषी माना जाएगा। भा.द.सं. की धारा 149 उस सभा के किसी अन्य सदस्य द्वारा सामान्य उद्देश्य के अनुसार किए गए गैरकानूनी कार्यों के लिए गैरकानूनी सभा के सदस्यों का एक रचनात्मक या परोक्ष दायित्व पैदा करती है। यह सिद्धांत सभा के प्रत्येक सदस्य को उस अपराध का दोषी मानता है, जब वह अपराध उस सभा के किसी सदस्य द्वारा उस सभा के सामान्य उद्देश्य अभियोजन में किया जाता है, या ऐसे सदस्यों या सभा को पता था कि उस उद्देश्य के अभियोजन में अपराध किए जाने की संभावना है।

21. चोट पहुँचाने या न पहुँचाने का तथ्य प्रासंगिक नहीं होगा, जहाँ अभियुक्त को धारा 149 भा.द.सं. की सहायता से आरोपित किया जाना है। न्यायालय द्वारा जाँचा जाने वाला प्रासंगिक प्रश्न यह है कि क्या अभियुक्त किसी गैरकानूनी सभा का सदस्य था, न कि यह कि उसने वास्तव में अपराध में सक्रिय भाग लिया था या नहीं।”

45. इस प्रकार, कृष्णप्पा मामले में यह न्यायालय [कृष्णप्पा बनाम कर्नाटक राज्य, (2012) 11 एस. सी. सी. 237:(2013) 1 एस. सी. सी. (सी. आर. आई.) 621] ने अभिनिर्धारित किया कि भा.द.सं. की धारा 149 उस सभा के किसी अन्य सदस्य द्वारा सामान्य उद्देश्य के अनुसरण में किए गए गैरकानूनी कार्यों के लिए गैरकानूनी सभा के सदस्यों का रचनात्मक या परोक्ष दायित्व पैदा करती है। इस सिद्धांत को लागू करके, एक गैरकानूनी सभा के प्रत्येक सदस्य को उस सभा के सामान्य उद्देश्य के अभियोजन में उस सभा के किसी भी सदस्य द्वारा किए गए अपराध का दोषी ठहराया जाता है। चोट पहुँचाने या चोट न पहुँचाने का तथ्य तब प्रासंगिक नहीं होगा जब किसी अभियुक्त को धारा 149 भा.द.सं. की सहायता से शामिल किया जाता है। जो सवाल प्रासंगिक है और जिसका अदालत द्वारा जवाब

दिया जाना आवश्यक है, वह यह है कि क्या आरोपी एक गैरकानूनी सभा का सदस्य था और क्या उसने वास्तव में अपराध में भाग लिया था या नहीं।

46. वास्तव में, इस न्यायालय ने विनुभाई रणछोडभाई पटेल बनाम राजीवभाई दुदाभाई पटेल [विनुभाई रणछोडभाई पटेल बनाम राजीवभाई दुदाभाई पटेल, (2018) 7 एससीसी 743: (2018) 3 एससीसी (क्रि) 340] में इस स्थिति को दोहराया है कि धारा 149 भा.द.सं. एक अलग अपराध नहीं बनाती है, बल्कि केवल गैरकानूनी सभा के सभी सदस्यों की सामान्य उद्देश्य से किए गए कार्यों के लिए प्रतिनिधिक देयता घोषित करती है। इस न्यायालय ने माना है: (एससीसी पृष्ठ 752-53 और 756, पैरा 20, 22 और 34)

“20. ऐसे मामलों में जहां "गैरकानूनी सभा" का गठन करने वाले बड़ी संख्या में अभियुक्तों पर एक या अधिक व्यक्तियों पर हमला करने और उनकी हत्या करने का आरोप लगाया जाता है, यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक अभियुक्त को घातक चोटें लगनी चाहिए या कोई चोट नहीं लगनी चाहिए। ऐसे मामलों में ऐसी गैरकानूनी सभाओं के सदस्यों को प्रत्यावर्ती दायित्व के आधार पर दंडित करने के लिए धारा 149 का आह्वान आवश्यक है, भले ही उन पर उचित मामलों में घातक चोट पहुंचाने का आरोप नहीं लगाया गया हो, यदि अभिलेख पर साक्ष्य उचित ठहराता है। इस तरह की "गैरकानूनी सभा" में केवल एक आरोपी की उपस्थिति उसे हमले की पीड़िता की मौत के लिए धारा 149 भा.द.सं. के तहत प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी बनाने के लिए पर्याप्त है, बशर्ते कि अभियुक्तों को बताया जाए कि उन्हें धारा 149 भा.द.सं. के तहत प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी होने के आरोप का सामना करना होगा। धारा 149 को उचित

रूप से लागू करने और लागू करने में विफलता बड़ी संख्या में अपराधियों को अपराध से बचने में सक्षम बनाती है।

22. जब बहुत से लोग एक साथ इकट्ठा होते हैं (एकत्रित होते हैं) और कोई अपराध करते हैं, तो यह संभव है कि सभा के कुछ ही सदस्य महत्वपूर्ण कार्य करते हैं जो कार्य को अपराध बनाता है और शेष सदस्य उस "महत्वपूर्ण कार्य" में भाग नहीं लेते हैं - उदाहरण के लिए हत्या के मामले में, घातक चोट पहुँचाना। ऐसी परिस्थितियों में, विधायिका ने विधायी नीति के रूप में अपराध के लिए प्रतिनिधिक दायित्व की अवधारणा को लागू करना उचित समझा। [रामू गोप बनाम बिहार राज्य, 1968 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 74, पैरा 5:ए. आई. आर 1969 एस. सी. 689, पी. 692, पैरा 5: "5. ... जब बड़ी संख्या में व्यक्तियों द्वारा पीड़ित पर एक ठोस हमला किया जाता है तो अक्सर प्रत्येक अपराधी द्वारा निर्भाई गई वास्तविक भूमिका का निर्धारण करना मुश्किल होता है। लेकिन उस कारण से गैरकानूनी सभा के किसी सदस्य द्वारा सामान्य उद्देश्य के अभियान में किए गए अपराध के लिए या किसी ऐसे अपराध के लिए जो सामान्य उद्देश्य के अभियान में किए जाने की संभावना के रूप में जाना जाता था, सदस्य साबित हुए व्यक्ति उस अधिनियम को करने से उत्पन्न होने वाले परिणामों से बच नहीं सकते हैं जो एक अपराध के बराबर हैं।"] भा.द.सं. की धारा 149 ऐसा ही एक प्रावधान है। यह समाज की शांति बनाए रखने और गलत काम करने वालों (जो सक्रिय रूप से सहयोग करते हैं या अपराध करने में सहायता करते हैं) को इस आधार पर दंड से मुक्त होने का दावा करने से रोकने के लिए व्यापक जनहित में परिकल्पित एक प्रावधान है कि गैरकानूनी सभा के सदस्यों के रूप में उनकी गतिविधि सीमित है।

34. धारा 149 के तहत गैरकानूनी सभा के सदस्यों पर दायित्व का आरोपण करने के लिए, यह आवश्यक नहीं है कि गैरकानूनी सभा का प्रत्येक सदस्य सभा के सामान्य उद्देश्य के लिए अपराध करे। सभा के सदस्यों द्वारा ऐसे अपराध किए जाने की संभावना का मात्र ज्ञान ही पर्याप्त है। उदाहरण के लिए, यदि एके 47 राइफल लेकर पांच या अधिक सदस्य सामूहिक रूप से किसी पीड़ित पर हमला करते हैं और गोली लगने से उसकी मृत्यु हो जाती है, तो इस तथ्य का कि सभा के एक या दो सदस्यों ने वास्तव में अपने हथियार नहीं चलाए, इसका यह अर्थ नहीं है कि उन्हें इस तथ्य का ज्ञान नहीं था कि हत्या का अपराध किए जाने की संभावना है।”

47. यह सच है कि अभियोजन में कुछ खामियां हैं। पत्रकार कुलदिप से पूछताछ नहीं की गई। इसी तरह, छोटे भाई लक्ष्मी नारायण से पूछताछ नहीं की गई, हालांकि यह रिकॉर्ड में आया है कि वर्ष 1993 में लक्ष्मी नारायण की हत्या कर दी गई थी और उस मामले में एक आरोपी स्वयं अपीलार्थी है। यह भी सच है कि न तो कोई देशी पिस्तौल बरामद की गई और न ही कोई खाली या अन्य कोई गोली बरामद की गई। हालाँकि, अपीलार्थी को धारा 149 भा.द.सं. की सहायता से शामिल किया गया है। इसलिए, जैसा कि इस न्यायालय द्वारा युनिस बनाम एम. पी. राज्य युनिस बनाम एमपी राज्य, [(2003) 1 एस. सी. सी. 425:2003 एस. सी. सी. (सी. आर. आई.) 341] मामले में अभिनिर्धारित किया गया है कि जब आरोप धारा 149 भा.द.सं. के तहत हो तो किसी व्यक्ति विशेष पर कोई प्रत्यक्ष कार्य आरोपित करने की आवश्यकता नहीं है; अभियुक्त की गैर-कानूनी सभा में मौजूदगी ही दोषसिद्धि के लिए पर्याप्त है। अ. सा.- 1 और अ. सा.- 2 के साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि अपीलकर्ता उस गैर-कानूनी सभा का हिस्सा था जिसने हत्या की।

हालाँकि उनसे गहनता से प्रतिपरीक्षण की गई, लेकिन इस संबंध में उनकी गवाही को झुठलाया नहीं जा सका।

48. ऊपर हमने जो चर्चा की है, उसे ध्यान में रखते हुए, हमारे मन में कोई संदेह नहीं है कि निचली अदालत ने अपीलार्थी को भा.द.सं. की धारा 148 और भा.द.सं. की धारा 302/149 के तहत दोषी ठहराया था और उच्च न्यायालय ने इसकी पुष्टि करना उचित ठहराया था। इसलिए उपरोक्त पैरा 16 में तैयार किए गए प्रश्न का उत्तर सकारात्मक है।”

27. इस प्रकार हम अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य से पाते हैं कि अपीलकर्ता सं. 2 से 6 सहित सभी अभियुक्त व्यक्ति गैरकानूनी सभा के सदस्य थे और विचाराधीन अपराध मुख्य रूप से अपीलकर्ता सं. 1 द्वारा किया गया था जिसके कारण शिव नाथ प्रसाद की मृत्यु हो गई थी, साथ ही अपीलकर्ता सं. 2 से 6 सहित अन्य अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा भी, जो उस सभा के सामान्य उद्देश्य के अभियोजन में गैरकानूनी सभा के सदस्य हैं, इसलिए अपीलकर्ताओं सहित सभी अभियुक्त व्यक्ति, जो विचाराधीन अपराध के समय उक्त गैरकानूनी सभा के सदस्य थे, निश्चित रूप से उस अपराध के दोषी हैं अर्थात् भा.द.सं. की धारा 149 के आह्वान द्वारा भा.द.सं. की धारा 302 के तहत दोषी हैं। इस प्रकार, भले ही मृतक की मृत्यु मुख्य रूप से अपीलकर्ता सं. 1 द्वारा किए गए घातक प्रहार के कारण हुई थी, फिर भी अपीलकर्ता सं. 2 से 6 और अन्य आरोपी व्यक्तियों को *नित्यानंद* (उपरोक्त) के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित कानून को ध्यान में रखते हुए धारा 149 भा.द.सं. की सहायता से भा.द.सं. की धारा 302 के तहत दोषी ठहराया जा सकता है। अब धारा 147 भा.द.सं. के तहत अपीलकर्ताओं की सजा पर आते हुए, यह न्यायालय पाता है कि दंगा को भा.द.सं. की धारा 146 के तहत परिभाषित किया गया है, जो इस प्रकार है:

“146. दंगे-जब भी किसी गैरकानूनी सभा द्वारा बल या हिंसा का उपयोग किया जाता है, तो किसी भी सदस्य द्वारा, ऐसी सभा के सामान्य उद्देश्य के अभियोजन में, ऐसी सभा का प्रत्येक सदस्य दंगे के अपराध का दोषी होगा।”

भा.द.सं. की धारा 141 गैरकानूनी सभा को पाँच या अधिक व्यक्तियों की सभा के रूप में परिभाषित करती है, यदि उस सभा की रचना करने वाले व्यक्तियों का सामान्य उद्देश्य आपराधिक बल के माध्यम से एक अवैध कार्य करना है। धारा 147 दंगे की सजा का प्रावधान करती है। अभियोजन पक्ष के नेतृत्व में साक्ष्य पर विचार करते हुए यह न्यायालय पाता है कि अपीलार्थियों को भा.द.सं. की धारा 147 के तहत सही तरीके से दोषी ठहराया गया है। हम यह भी पाते हैं कि वर्तमान मामला भा.द.सं. की धारा 304 भाग-॥ के दायरे में नहीं आता है, क्योंकि अपीलकर्ता सं. 1 ने मृतक के सिर पर बार-बार लाठियों से वार किया था, जिससे उसकी मृत्यु हो गई और जहां तक अपीलकर्ता सं. 2 से 6 का संबंध है, वे गैरकानूनी सभा के सदस्य होने के कारण, भा.द.सं. की धारा 149 की सहायता से भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत सही रूप से दोषी ठहराए गए हैं।

28. वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों और साक्ष्य पर विचार करते हुए, जो अपीलार्थियों के खिलाफ लगाए गए आरोपों को किसी भी उचित संदेह से परे साबित करने के लिए रिकॉर्ड पर लाया गया है, साथ ही अभियोजन पक्ष के साक्ष्य की विश्वसनीयता और निःसन्देहता पर विचार करते हुए, जिसे पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के साथ प्रतिपरीक्षण के दौरान खारिज नहीं किया गया है और ऊपर उल्लिखित कारणों से, हम पाते हैं कि हमारे मन में कोई संदेह का कोई कारण नहीं है। हमने अभिलेख पर उपलब्ध सामग्रियों की जांच की है और दोषसिद्धि और सजा के आदेश के विवादित निर्णय में कोई स्पष्ट त्रुटि नहीं पाई गयी है, इसलिए इसमें किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है।

29. तदनुसार, वर्तमान अपील अर्थात् 2016 की आपराधिक अपील (खंड पीठ) सं. 1160 खारिज की जाती है।

30. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि वर्तमान अपील खारिज हो गई है, अपीलकर्ता सं. 2 से 6 के जमानत बांड, जिन्हें दिनांक 21.12.2016 के आदेश द्वारा वर्तमान अपील के लंबित रहने के दौरान जमानत दी गई थी, एतद्द्वारा रद्द कर दिए जाते हैं और उन्हें शेष सजा काटने के लिए जेल भेजे जाने हेतु विद्वत निचली अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया जाता है। जहां तक अपीलकर्ता सं. 1, अर्थात् लक्ष्मण साह का संबंध है, वह पहले से ही हिरासत में है, इसलिए उसे शेष सजा काटने का निर्देश दिया जाता है।

में सहमत हूँ।

(मोहित कुमार शाह, न्यायमूर्ति)

नानी तागिया, न्यायमूर्ति

(नानी तागिया, न्यायमूर्ति)

अजय/-

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।